रिमझिम – 2

दूसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

0217

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

रिमझिम–2

दूसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

यह किताब .... की है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

0217 – रिमझिम
दूसरी कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-673-X

प्रथम संस्करण
फरवरी 2007 माघ 1928

पुर्नमुद्रण
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 पौष 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
दिसंबर 2012 अग्रहायण 1934
अक्तूबर 2013 अग्रहायण 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फ़रवरी 2017 माघ 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
जनवरी 2021 पौष 1942

PD 150T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् , 2007

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा देवटैक पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स प्रा. लि., 14/3 बोलटान कम्पाउंड, मथुरा रोड, .फरीदाबाद पिनकोड – 121 003 (हरियाणा) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

न.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*विपिन दिवान*
सहायक संपादक	:	*मरियम बारा*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*मुकेश गौड़*

आवरण और सज्जा
ब्लू फिश

चित्रांकन
अनिल चैत्या वांगड़, जोयल गिल, निधि वाधवा, राधा-रमेश टेकाम, रंजीत बालुमुचु, संजीत कुमार पासवान

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती

not to be republished © NCERT

है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

© NCERT not to be republished
2021-22

बड़ों से दो बातें

रिमझिम शृंखला के अंतर्गत दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक **रिमझिम 2** आपके सामने है। **रिमझिम 1** की तरह यह किताब भी केवल एक पाठ्यपुस्तक ही नहीं बल्कि बच्चों के साथ मिलकर कविता गाने, कहानी सुनने–सुनाने, भाषा के रोचक खेल खेलने का एक ज़रिया भी है। किताब में इस बात के संकेत भी मिलते हैं कि बच्चों से बातचीत करने के लिए, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने–लिखने के लिए, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए घर और स्कूल में कितने ही अवसर ढूँढ़े जा सकते हैं। दुनिया को समझने के लिए भाषा एक बढ़िया औज़ार का काम देती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम दुनिया को बच्चों की निगाह से देखें और बच्चों के जीवन में भाषा के महत्त्व को समझें। इस पाठ्यपुस्तक में दूसरी कक्षा के बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए पाठ्यसामग्री तथा अभ्यास एवं गतिविधियाँ दी गई हैं। इस पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा जाए तो बच्चे के लिए भाषा सीखना एक सुखद अनुभव बन सकेगा।

- भाषा के अपने कुछ नियम होते हैं। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे इन **नियमों का प्रयोग** करते हैं भले ही वे इन नियमों को बता न पाएँ। यदि परिवेश में बोली जाने वाली भाषा सुनकर बच्चे बोलना सीख जाते हैं तो समृद्ध परिवेश मिलने पर बच्चे पढ़ना–लिखना भी सीख सकते हैं। लिखित भाषा का भरपूर परिवेश यदि स्कूल में बनाया जाए तो स्वत: ही पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करने में बच्चों को सहायता मिलेगी।

- भाषा प्रयोगों से ही परिष्कृत होती है और इस पुस्तक में तो बच्चों के लिए इस तरह का वातावरण ही उपलब्ध किया गया है कि बच्चे संवाद स्थापित कर सकें। वह भाषा सीखने के दौरान रटी–रटाई वर्णमाला के आवरण से निकलकर स्कूल की दुनिया से बाहर की भी गतिविधियों से अपने आप को जोड़ सकें। बच्चे ऐसा करके न सिर्फ़ आनंदित होंगे बल्कि उत्साह से

© NCERT not to be republished

संवादों का आदान–प्रदान भी करेंगे। उनके कौतुहल को शब्द दे पाना एक शिक्षक के लिए बच्चों से बातें करने और उनसे जुड़ने का एक सुनहरा अवसर होता है। संवाद का यह सिलसिला बच्चों की जिज्ञासाओं के शमन के साथ उनमें अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास भी भर देता है।

- इस पुस्तक में बाल–साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है ताकि बच्चों का पढ़ने–लिखने के प्रति रुझान बढ़ सके। अच्छी रचनाएँ बच्चों के लिए न केवल रोचक होती हैं बल्कि पढ़ना–लिखना सीखने में भी बहुत सहायक होती हैं। श्रवण और पठन कौशल के विकास में **कविता** आश्चर्यजनक योगदान करती है। बच्चे कविताओं का भरपूर आनंद ले सकें इसके लिए उन्हें अपने चारों ओर बिठाएँ और किताब को बीच में रखें। दो–तीन बार पढ़ने के बाद आप किताब के बगैर कविता गाकर सुनाएँ और बच्चे आपके साथ गाएँ। जल्दी ही वे कविता को याद कर लेंगे और गा भी सकेंगे।
- कहानियाँ बच्चों की कल्पना को नयी उड़ान देकर एक निराली दुनिया में ले जाती हैं जिसमें जाने के लिए बच्चे आतुर रहते हैं। दादा–दादी के मुख से सुनी गई कहानियाँ बच्चों को लम्बे समय तक याद रहती हैं और वे अपनी कल्पनाओं के आधार पर ही एक नए संसार का सृजन कर लेते हैं।
- बच्चों की रुचि को दृष्टिगत रखकर बनाई गई गतिविधियाँ तथा अभ्यास इस पुस्तक में भरपूर मात्रा में दिए गए हैं। इनके माध्यम से कुछ करके सीखने का भरपूर अवसर बच्चों को मिलेगा। जिससे बच्चे भाषा का इस्तेमाल सिर्फ़ पढ़ने–लिखने और बोलने के लिए ही नहीं बल्कि तर्क करने, विश्लेषण करने, अनुमान लगाने, अपनी भावनाओं और सोच को अभिव्यक्त करने और कल्पना करने आदि के लिए भी करेंगे।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाव देती है कि पहली और दूसरी कक्षा में भाषा और गणित के ही माध्यम से कला शिक्षण किया जाए। इसी को दृष्टिगत रखते हुए पुस्तक में विभिन्न कलाओं से संबंधित गतिविधियाँ दी गई हैं। सांस्कृतिक विविधताओं को भी पुस्तक में स्थान दिया गया है। किताब में वरली (महाराष्ट्र) मधुबनी (बिहार) तथा गोंडी भिट्टी (मध्य प्रदेश) शैली के चित्र दिए गए हैं ताकि बचपन से ही बच्चे विभिन्न लोकशैलियों से परिचित हो सकें। हमारा देश लोककथा एवं लोकगीतों से समृद्ध है। इस

2021-22

किताब में 'दोस्त की मदद' (मलयालम लोककथा) तथा 'टेसू राजा बीच बाज़ार' (लोकगीत) दिए गए हैं। विभिन्न वाद्य यंत्रों की जानकारी भी बच्चों को दी गई है।

◈ **रिमझिम-2** रंगीन आकर्षक चित्रों से सजी है। चित्र पुस्तक को आकर्षक बनाने के साथ अनेक भाषायी कौशल विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। शिक्षक बच्चों को अपने पास बैठाकर चित्र दिखाएँ और उनसे बातचीत करें। यह बातचीत बच्चों को आनंदित करने के साथ ही साथ उनसे संवाद स्थापित करने का भी प्रयास है। चित्रों पर चर्चा बच्चों में भाषायी कौशलों के साथ अवलोकन आदि कौशल भी विकसित करेगी।

◈ किताब में दिया पाठ **कौन अधिक बलवान** अंग्रेज़ी की दूसरी कक्षा की किताब **Marigold-Book Two** में भी दिया गया है। इसके पीछे धारणा यही है कि हिंदी में पाठ पढ़ने के बाद बच्चा अंग्रेज़ी में पढ़ेगा तो सहजता से पाठ समझ लेगा। शिक्षक को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि शिक्षण योजना इस प्रकार बनाए कि बच्चा हिंदी में पाठ पहले पढ़े बाद में अंग्रेजी में। पहली कक्षा की किताब में **सुहानी** बिल्ली ने अपनी मज़ेदार बातों से बच्चों को गुदगुदाया था। नटखट सुहानी की याद बच्चों को फिर से दिलाने के लिए सुहानी से संबंधित अभ्यास भी दिया गया है।

◈ अभ्यास तथा गतिविधियाँ करवाते समय शारीरिक रूप से चुनौती वाले बच्चों को विशेष रूप से ध्यान में रखें। जैसे- पृष्ठ-35 में एक प्रश्न है–

खूब तेज़ बारिश होगी तो तुम्हारे आस-पास कैसा दिखाई देगा?

यदि कक्षा में कोई ऐसा बच्चा है जिसे ठीक से दिखाई नहीं देता तो उससे यह सवाल पूछा जा सकता है–

बरसात होने पर कैसी आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं?

इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि प्रत्येक अभ्यास तथा गतिविधियाँ ऐसी हों जिनमें कक्षा का प्रत्येक बच्चा भाग ले सके।

© NCERT not to be republished

किताब में आए चिह्न

तुम्हें किताब में जगह-जगह ये चिह्न दिखाई देंगे। इनका मतलब यहाँ दिया गया है।

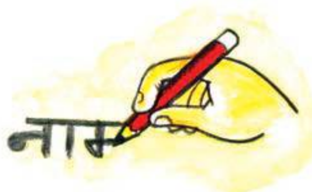

लिखो

खेल

सिर्फ़ पढ़ने के लिए

ढूँढ़ो और लिखो

बनाओ

तुम्हारी कल्पना से

करो

खोजो

बातचीत के लिए

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्रवक्ता, मिरांडा हाउस,* नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका,* केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

कृष्ण कुमार, *निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मालविका राय, *शिक्षिका,* हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नयी दिल्ली

रमेश कुमार, प्रवक्ता, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता,* जीसस एंड मेरी कॉलेज, नयी दिल्ली

शारदा कुमारी, प्रवक्ता, जिला मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, आर. के. पुरम, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

लता पाण्डे, *प्रवाचक,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली; प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; एकलव्य प्रकाशन, भोपाल; नवनीत प्रकाशन; मुम्बई; तूलिका पब्लिशर्स, चेन्नई; शकुंतला देवी, नयी दिल्ली; पूनम सेवक, बरेली के हम आभारी हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नयी दिल्ली एवं संग्रहालयाध्यक्ष, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रति भी हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए विजय कौशल, ममता, पूजा शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; रेखा सिन्हा, *प्रूफ़ रीडर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज*, कंप्यूटर कक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है

आमुख — *v*

बड़ों से दो बातें — *vii*

किताब में आए चिह्न — *x*

1. ऊँट चला — 1

2. भालू ने खेली फुटबॉल — 8

3. म्याऊँ, म्याऊँ!! — 15

बिल्ली कैसे रहने आयी मनुष्य के संग — 19

4. अधिक बलवान कौन? — 23

5. दोस्त की मदद — 27

6. बहुत हुआ — 34

काले मेघा पानी दे — 38

सावन का गीत — 39

© NCERT not to be republished

7. मेरी किताब 40

8. तितली और कली 46

9. बुलबुल 50

10. मीठी सारंगी 56

11. टेसू राजा बीच बाज़ार 62

12. बस के नीचे बाघ 70

तेंदुए की खबर 76

बाघ का बच्चा 79

13. सूरज जल्दी आना जी 81

14. नटखट चूहा 85

15. एक्की-दोक्की 96

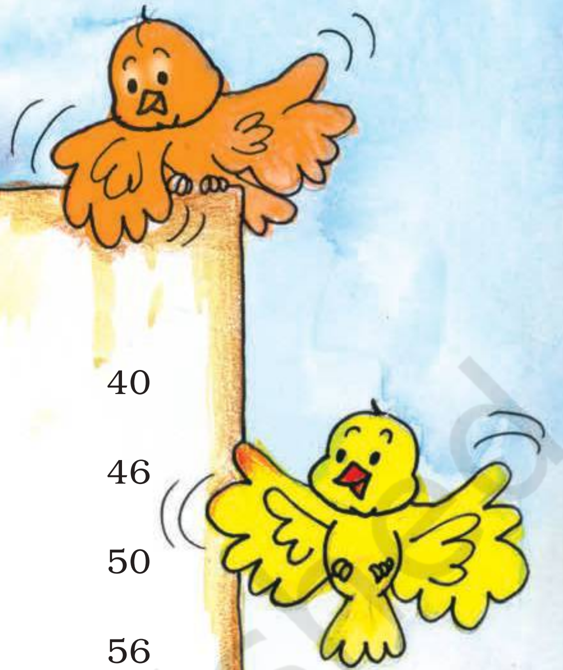

© NCERT not to be republished

1. ऊँट चला

0217CH01

ऊँट चला, भई ऊँट चला
हिलता डुलता ऊँट चला।

इतना ऊँचा ऊँट चला
ऊँट चला, भई ऊँट चला।

ऊँची गर्दन, ऊँची पीठ
पीठ उठाए ऊँट चला।

© NCERT not to be republished

बालू है, तो होने दो
बोझ ऊँट को ढोने दो।

नहीं फँसेगा बालू में
बालू में भी ऊँट चला।

जब थककर बैठेगा ऊँट
किस करवट बैठेगा ऊँट?

बता सकेगा कौन भला
ऊँट चला, भई ऊँट चला।

© NCERT not to be republished

झटपट कविता पढ़ कर मज़ा लो।

....

कुछ ऊँट ऊँचा
कुछ पूँछ ऊँची
कुछ ऊँचे ऊँट की
पीठ ऊँची

अब जल्दी-जल्दी बोलकर देखो। जीभ लड़खड़ा गई न! कैसी लगी कविता? अब इस कविता को अपने मन से नाम दो। ऊपर दी गई जगह में लिख भी दो।

रेगिस्तान

- ऊँट रेगिस्तान में ज़्यादा मिलते हैं। नीचे दो चित्र बने हैं। सही जगह पर ऊँट का चित्र बनाओ।

- बालू या रेत कहाँ-कहाँ पर मिलती है?

© NCERT not to be republished

कितना

हिलता डुलता ऊँट चला
इतना ऊँचा ऊँट चला

अब बताओ

- **ऊँट कितना ऊँचा?**

तुम्हारी कक्षा की दीवार	हाथी जितना	बिजली के खंभे जितना	.... जितना

- **हाथी कितना मोटा?**

तुम्हारी माँ के संदूक जितना	ऊँट जितना	पहाड़ जितना	.... जितना

- **चींटी कितनी छोटी?**

चीनी के दाने जितनी	चावल के दाने जितनी	इलायची के दाने जितनी	.... जितनी

कुछ ऊँचा कुछ नीचा

(क) ऊँट से ऊँची चीज़ों के नाम पर गोला लगाओ।

- बछिया
- तुम्हारी कक्षा की छत
- बिजली का खंभा
- हाथी
- आम का पेड़

(ख) ऊँट के नीचे से क्या-क्या निकल सकता है?

(ग) किन-किन चीज़ों की मदद से ऊँट पर चढ़ोगे?

© NCERT not to be republished

सफ़र का सामान

ऊँची गर्दन, ऊँची पीठ,
पीठ उठाए ऊँट चला

बताओ, ये सब क्या उठाकर चलेंगे–

हाथी	....	....	....
टीचर जी	....	....	....
पिताजी	....	....	....
शेर	....	....	....
दादा जी	....	....	....

अलग-अलग घर

- नीचे कुछ शब्द लिखे हैं। इन्हें बोलकर देखो। अब मिलते-जुलते शब्दों को सही खानों में लिखो।

जूट, सूट, भला, धँस, हँस, तब, कब, गला, आलू, चालू

ऊँट	बालू	फँस	चला	जब
जूट	....	....	....	....
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....

- ऐसे ही और शब्द सोचकर लिखो।

© NCERT not to be republished

अक्षर की बात

- कविता में **ब** से शुरू होने वाले शब्द कौन-कौन से हैं? उनके नीचे रेखा खींचो।
- तुम्हारा नाम किस अक्षर से शुरू होता है? उस अक्षर से चार शब्द और लिखो।

....

....

बोझा

बालू है तो होने दो
बोझ ऊँट को ढोने दो

- बहुत से जानवरों को बोझा ढोने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। क्या तुम्हें यह ठीक लगता है? क्यों?
- तुम्हारे आसपास कौन-कौन बोझ उठाते हैं ?

कविता बढ़ाओ

अक्की बक्की
करें तरक्की

....

....

....

....

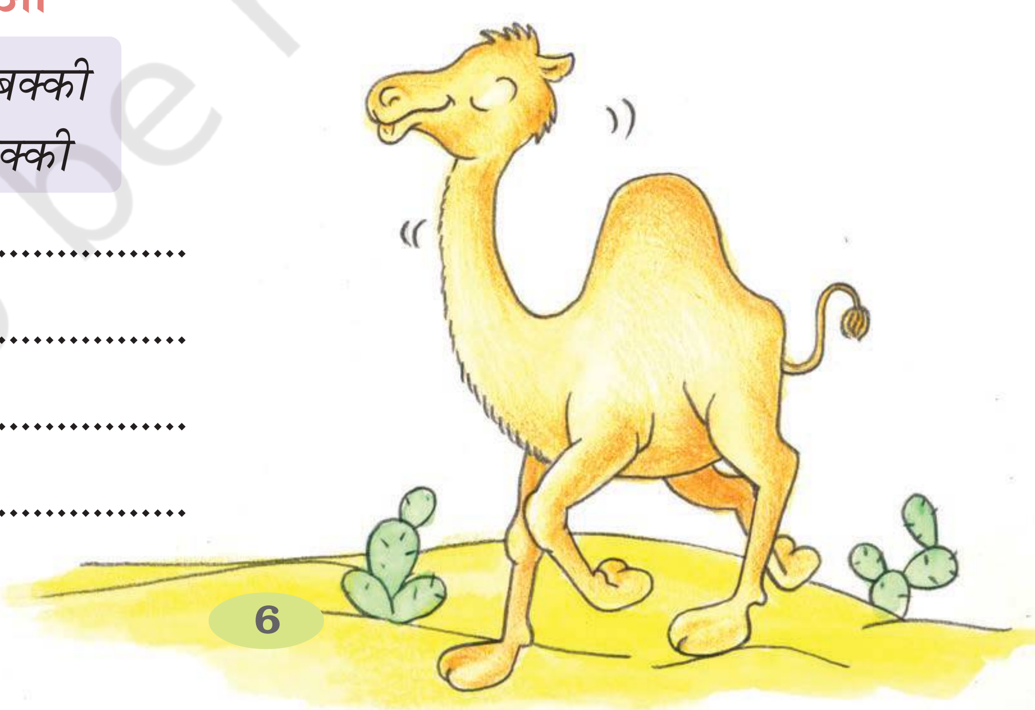

© NCERT not to be republished

कितने ऊँट

- इस कविता में कुल कितनी बार **ऊँट** शब्द आया है? बिना देखे बताओ।

  .... बार

- नीचे चित्र में कितने ऊँट छिपे हैं? ध्यान से देखकर बताओ।

not to be republished

2. भालू ने खेली फ़ुटबॉल

0217CH02

सर्दियों का मौसम था। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। एक शेर का बच्चा सिमटकर गोल-मटोल बना जामुन के पेड़ के नीचे सोया हुआ था।

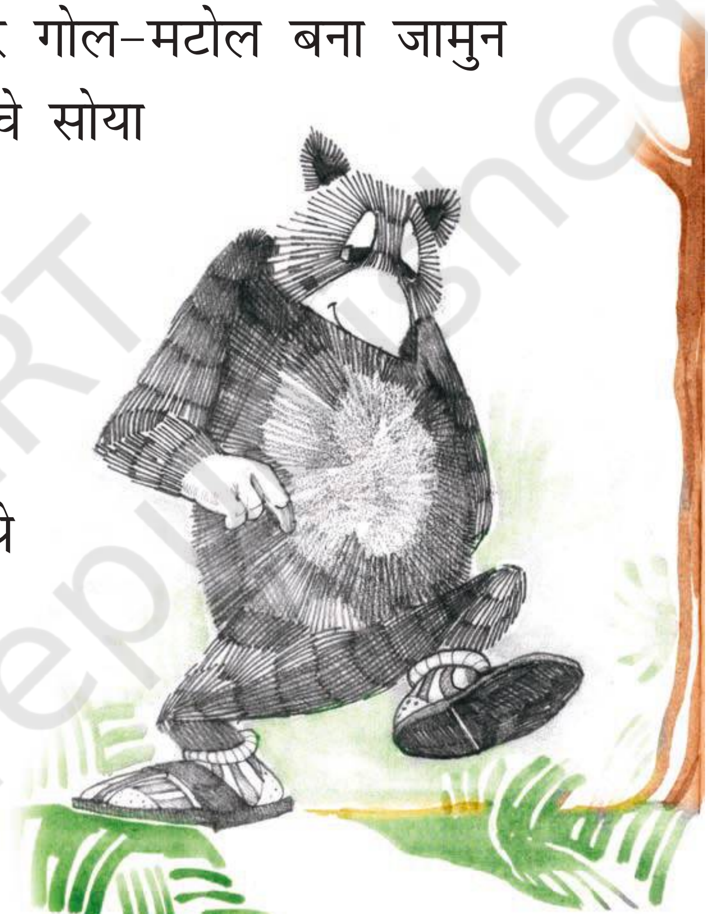

इधर भालू साहब सैर पर निकल तो आए थे लेकिन पछता रहे थे। तभी उनकी नज़र जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी।

आँखें फैलाई, अक्ल दौड़ाई- अहा फ़ुटबॉल। सोचा, चलो इससे खेलकर कुछ गर्मी हासिल की जाए।

© NCERT not to be republished

आव देखा न ताव। भालू जी ने पैर से उछाल दिया शेर के बच्चे को।

हड़बड़ी में शेर का बच्चा दहाड़ा और फिर पेड़ की एक डाल पकड़ ली।

मगर डाल टूट गई। भालू साहब जल्दी ही मामला समझ गए। पछताए, लेकिन अगले ही पल दौड़कर फ़ुर्ती से दोनों हाथ बढ़ाए और शेर के बच्चे को लपक लिया।

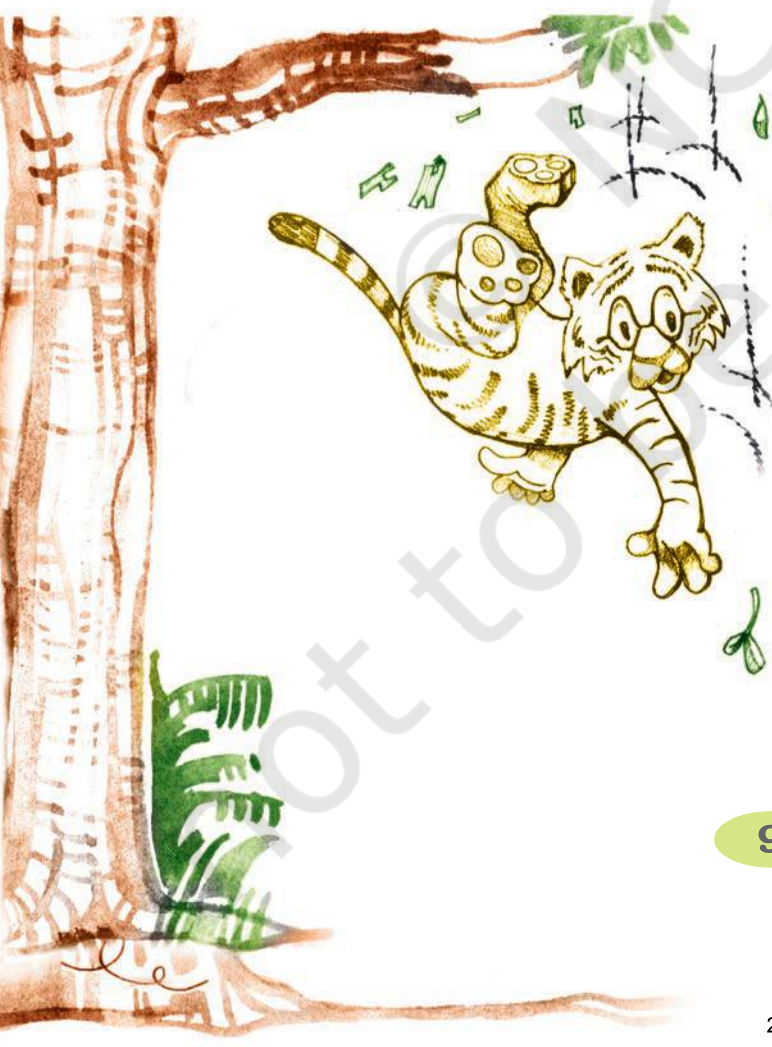

अरे यह क्या! शेर का बच्चा फिर से उछालने के लिए कह रहा था।

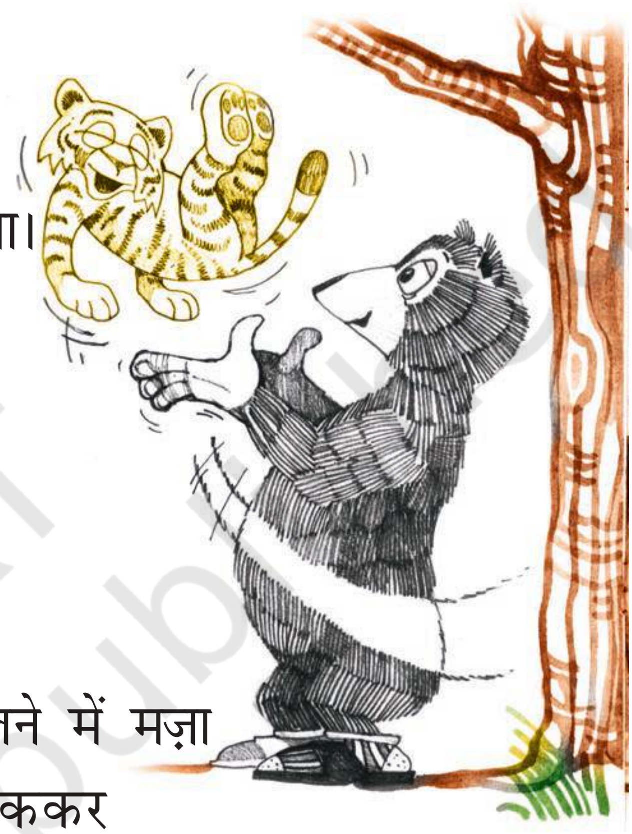

एक बार फिर भालू दादा ने उछाला।
दो बार...
तीन बार...
फिर
बार–बार यही होने लगा।

शेर के बच्चे को उछलने में मज़ा आ रहा था। परंतु भालू थककर परेशान हो गया था।

ओह, किस आफ़त में आ फँसा।
बारहवीं बार उछालते ही
भालू ने घर की ओर
दौड़ लगाई और गायब
हो गया।

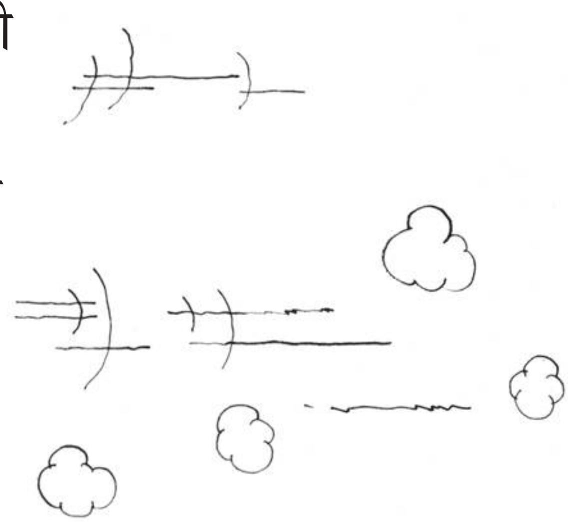

© NCERT not to be republished

अब की बार शेर का बच्चा
धड़ाम से ज़मीन पर आ गया।
डाल भी टूट गई।

तभी माली वहाँ आया और
शेर के बच्चे पर बरस पड़ा–

डाल तोड़ दी पेड़ की।
लाओ हर्जाना।

शेर के बच्चे ने कहा–
ज़रा ठीक तो हो लूँ।

माली ने कहा ठीक है।
मैं अभी आता हूँ।

माली के वहाँ से जाते ही शेर
का बच्चा भी नौ दो ग्यारह हो
लिया। उसने सोचा–
जान बची तो लाखों पाए।

© NCERT not to be republished

कहानी से

- शेर के बच्चे ने पेड़ की डाल क्यों पकड़ी?
- शेर का बच्चा क्यों दहाड़ा?
- भालू साहब किस बात पर पछताए?
- भालू ने क्यों कहा—ओह! किस आफ़त में आ फँसा?

पहले क्या हुआ, फिर क्या-क्या हुआ

- भालू ने शेर के बच्चे को उछाल दिया। ☐
- शेर के बच्चे ने पेड़ की डाल पकड़ ली। ☐
- भालू ने घर की ओर दौड़ लगाई। ☐
- भालू साहब सैर को निकले। ☐
- भालू ने शेर के बच्चे को लपककर पकड़ लिया। ☐

क्या होता अगर

- भालू शेर के बच्चे को न पकड़ता?
- शेर का बच्चा नौ दो ग्यारह न होता?

करके देखो

- जब भालू ने शेर के बच्चे को उछाला, वह दहाड़ा।
  उसके दहाड़ने की आवाज़ कैसी होगी, बोलकर दिखाओ।
- नीचे लिखे कामों को कैसे करते हैं? कक्षा में करके बताओ।

लपकना	फेंकना
कंघी करना	मोज़ा पहनना
दबे पाँव चलना	धुले कपड़े निचोड़ना

not to be republished © NCERT

शेर के बच्चे ने सुनाई आपबीती

शेर के बच्चे ने घर जाकर अपने माता-पिता को अपनी कहानी सुनाई। उसने क्या-क्या सुनाया होगा? बताओ।

खेल-खेल में

(क) फ़ुटबॉल को **फ़ुट बॉल** क्यों कहते होंगे?

(ख) ऐसे खेलों के नाम बताओ जिनमें **बॉल** (गेंद) का इस्तेमाल करते हैं।

पिट्ठू............ ....

तुम्हारी समझ से

ठंड से बचने के लिए शेर का बच्चा गोल-मटोल सिमटकर बैठ गया था।

तुम्हारे विचार से शेर का बच्चा ठंड से बचने के लिए और क्या-क्या कर सकता था?

उलट-पुलट

सर्दियों का मौसम। चारों ओर **कोहरा ही कोहरा**।

गर्मियों का मौसम। चारों ओर **धूप ही धूप**।

उदाहरण के अनुसार शब्दों को उलटकर लिखो।

- शेर का बच्चा फिर से **उछालने** को कह रहा था।
  शेर का बच्चा फिर से .... को कह रहा था।
- पेड़ की एक डाल **पकड़** ली।
  पेड़ की एक डाल .... दी।

- पिट्ठु को सतौलिया भी कहते हैं।

not to be republished © NCERT

ठंड से बचना

भालू ने ठंड से बचने के लिए फ़ुटबॉल खेलने की बात सोची। तुम ठंड से बचने के लिए क्या-क्या करती हो? (✓) का निशान लगाओ।

- दौड़ लगाती हो।
- गर्म कपड़े पहनकर घर में बैठती हो।
- रज़ाई ओढ़ती हो।
- आग तापती हो।
- ठंडा पानी पीती हो।
- गर्म पानी में नहाती हो।
- गर्म-गर्म चाय पीती हो।

© NCERT not to be republished

3. म्याऊँ, म्याऊँ!!

सोई–सोई एक रात मैं
एक रात मैं सोई–सोई
रोई एकाएक बिलखकर
एकाएक बिलखकर रोई

रोती क्यों ना, मुझे नाक पर
मुझे नाक की एक नोक पर
काट गई थी चुहिया चूँटी
चुहिया काट गई चूँटी भर

सचमुच बहुत डरी चुहिया से
चुहिया से सच बहुत डरी मैं
खड़ी देखकर चुहिया को मैं
लगी काँपने घड़ी-घड़ी मैं

सूझा तभी बहाना मुझको
मुझको सूझा एक बहाना
ज़रा डराना चुहिया को भी
चुहिया को भी ज़रा डराना

कैसे भला डराऊँ उसको
कैसे उसको भला डराऊँ
धीरे से मैं बोली म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ

© NCERT not to be republished

सुहानी की बात

- तुम्हें अपनी दोस्त सुहानी याद है न? उसका एक दोस्त भी था। उस नटखट दोस्त का नाम लिखो।

  ....

- इस कविता में बिल्ली की आवाज़ किसने निकाली है? उसका भी नाम सोचो।

  ....

- अगर सुहानी इस लड़की की दोस्त होती तो क्या करती?

  ....

डरना मत

- कविता में लड़की ने म्याऊँ की आवाज़ निकाली थी। म्याऊँ की आवाज़ सुनकर चुहिया पर क्या असर हुआ होगा?
- तुम्हें सबसे ज़्यादा डर किससे लगता है? तब तुम क्या करते हो?
- अब बताओ तुम्हें अगर उसे डराना हो तो कैसे डराओगे? क्या करोगे?

बन गया वाक्य

नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में इस्तेमाल करो—

- सूझा ....
- धीरे से ....
- सचमुच ....
- बहाना ....

© NCERT not to be republished

नोक

चुहिया ने नाक की नोक पर चूँटी भरी।

किन-किन चीज़ों की नोक होती है? लिखो और उसका चित्र भी बनाओ।

....

....

चूँटी

चूँटी अँगूठे और उँगलियों से भरी जाती है।

अँगूठे और उँगलियों से और कौन-कौन से काम किए जा सकते हैं?

चुटकी बजाना ....

....

शब्दों का उलट-फेर

सूझा मुझको एक बहाना
मुझको सूझा एक बहाना

कविता में कही गई इस बात को बातचीत में इस तरह कहेंगे–

मुझको एक बहाना सूझा।

नीचे लिखी बातों को दो तरीकों से लिखो।

खड़ी गाय थी चौराहे पर	घुस गया शेर जंगल में
....	....
....	....

2021-22

not to be republished © NCERT

बिल्ली कैसे रहने आई मनुष्य के संग

© NCERT not to be republished

पेट भर गया बहन। साफ़ कर लो सब।
हाँ भैया।
लो, कुछ भी नहीं छोड़ा मेरे लिए। रोज़ यही होता है।
एक दिन शेर बीमार पड़ा और उसका हाल पूछने बहुत से जानवर आए।
बिल्ली ने जानवरों का स्वागत करने के लिए हर एक से बात की।
लेकिन ठीक तभी–
बहन।
नाश्ता बना कर सबको दो। जाओ, जल्दी करो!
भैया, घर में आग तो है ही नहीं।
तो जाओ आदमियों की बस्ती से सुलगती लकड़ी ले आओ। भागो!
सो बिल्ली भागी, झाड़ियों और पत्थरों को फलाँगती हुई गाँव में पहुँची।
वहाँ देखो।

2021-22

not to be republished © NCERT

© NCERT not to be republished

4. अधिक बलवान कौन?

0217CH04

एक बार हवा और सूरज में बहस छिड़ गई।
हवा ने सूरज से कहा– मैं तुमसे अधिक बलवान हूँ।
सूरज ने हवा से कहा– मुझमें तुमसे ज़्यादा ताकत है।

इतने में हवा की नज़र एक आदमी पर पड़ी। हवा ने कहा– इस तरह बहस करने से कोई फ़ायदा नहीं है। जो इस आदमी का कोट उतरवा दे, वही ज़्यादा बलवान है।

सूरज हवा की बात मान गया। उसने कहा– ठीक है। दिखाओ अपनी ताकत।

हवा ने अपनी ताकत दिखानी शुरू की।

आदमी की टोपी उड़ गई। पर कोट उसने अपने दोनों हाथों से शरीर से लपेटे रखा और जल्दी-जल्दी कोट के बटन बंद कर लिए।

not to be republished

हवा और ज़ोर से चलने लगी।
अंत में आदमी नीचे ही गिर पड़ा। पर कोट उसके शरीर पर ही रहा। अब हवा थक गई थी।
सूरज ने कहा– हवा, अब तुम मेरी ताकत देखो।
सूरज तपने लगा।
आदमी ने कोट के बटन खोल दिए।
सूरज की गर्मी और बढ़ी।
आदमी ने कोट उतार दिया और उसे हाथ में लेकर चलने लगा।
सूरज ने कहा–देखी मेरी ताकत? उतरवा दिया न कोट?
हवा ने सूरज को नमस्कार किया और कहा–मान गई तुम्हारी ताकत को।

not to be republished © NCERT

हवा की बात

- हवा को ऐसा क्यों लगा होगा कि वह सूरज से अधिक बलवान है?
- हवा आदमी का कोट कैसे उतरवा सकती थी? कोई तरकीब सोचो।

गर्मी

- आदमी ने गर्मी लगने पर कोट उतार दिया। तुम गर्मी लगने पर क्या-क्या करती हो?

....

....

....

किसमें कितनी ताकत

बताओ, इनमें से कौन अधिक बलवान है? तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?

- **सूरज या हवा?**

  मुझे लगता है कि .... अधिक बलवान है

  क्योंकि ....

- **हाथी या शेर?**

  मुझे लगता है कि .... अधिक बलवान है

  क्योंकि ....

- **गर्मी या सर्दी?**

  मुझे लगता है कि .... अधिक बलवान है

  क्योंकि ....

© NCERT not to be republished

ताकत की बात

(क) हवा ने अपनी ताकत दिखाने के लिए क्या किया?

(ख) सूरज ने अपनी ताकत दिखाने के लिए क्या किया?

(ग) ये सब अपनी ताकत दिखाने के लिए क्या करेंगे?

- पानी
- बादल
- पहाड़
- सर्दी

तो क्या होता

मान लो कि हवा ने कहा – जो मिट्टी में गड़े इस तंबू को उखाड़ दे, वह ज़्यादा ताकतवर होगा। ऐसा होता तो कहानी में आगे क्या होता? सोचो और बताओ।

शब्दों का खेल

ता	ज	म	ह	ल

यहाँ पर छह शब्द छिपे हैं–

ताज, महल, जम, हल, ताल, मल

नीचे लिखे शब्द में तुम भी इसी तरह आठ शब्द ढूँढ़ो।

क	म	ल	क	क	ड़ी

एक के बदले दूसरा

- **बलवान** की जगह हम **ताकतवर** शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं। नीचे लिखे शब्दों की जगह तुम और कौन-से शब्द चुन सकती हो?

अधिक .... शरीर ....

फ़ायदा .... झगड़ा ....

नमस्कार .... सर्दी ....

not to be republished © NCERT

0217CH05

5. दोस्त की मदद

किसी तालाब में एक कछुआ रहता था। तालाब के पास माँद में रहने वाली एक लोमड़ी से उसकी दोस्ती हो गई। एक दिन वे तालाब के किनारे गपशप कर रहे थे कि एक तेंदुआ वहाँ आया। दोनों अपने-अपने घर की ओर जान बचाकर भागे। लोमड़ी तो सरपट दौड़कर अपनी माँद में पहुँच गई पर कछुआ अपनी धीमी चाल के कारण तालाब तक नहीं पहुँच सका। तेंदुआ एक छलाँग में उस तक पहुँच गया।

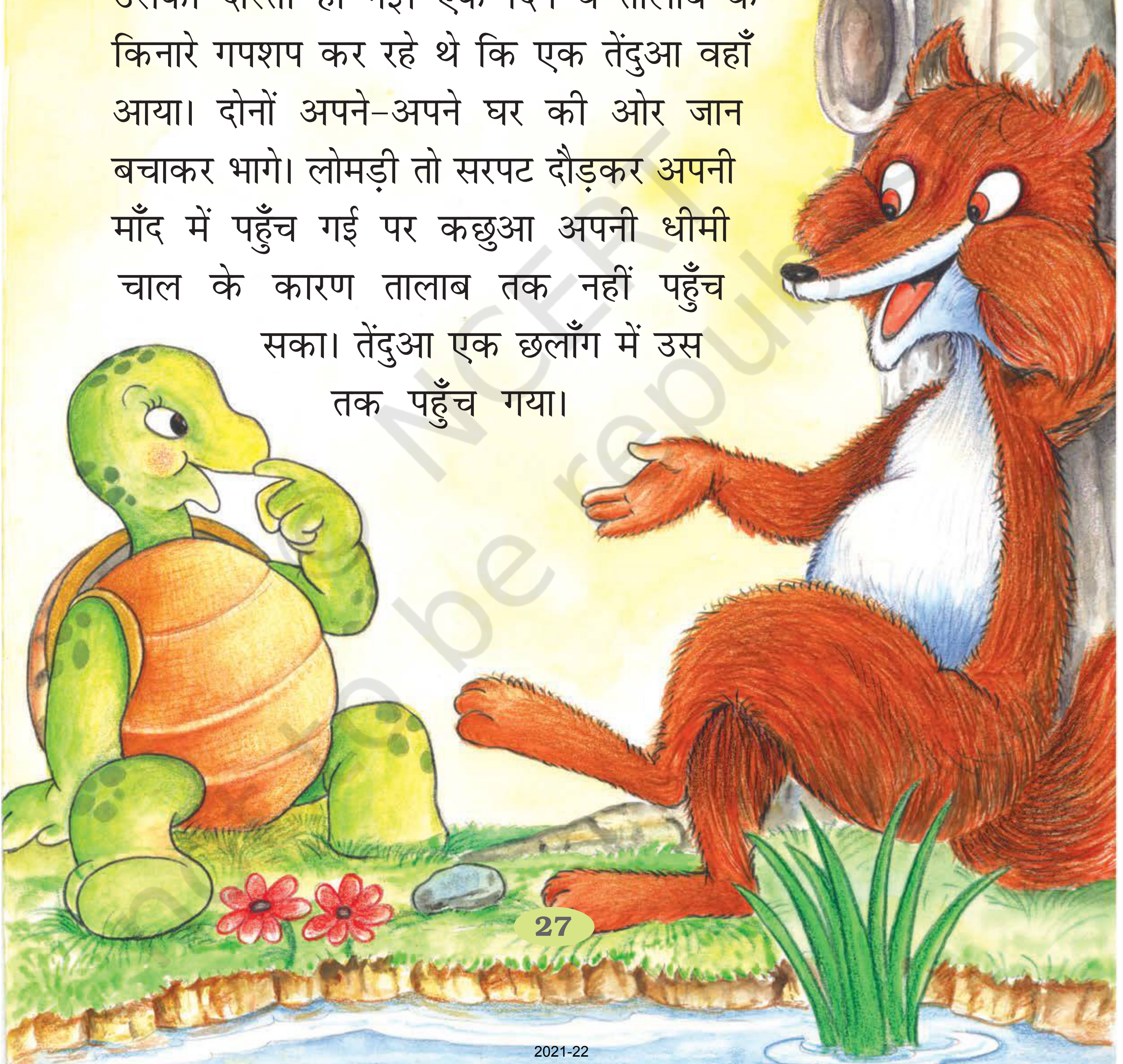

कछुए को कहीं छुपने का भी मौका न मिला। तेंदुए ने कछुए को मुँह में पकड़ा और उसे खाने के लिए एक पेड़ के नीचे चला गया लेकिन दाँतों और नाखूनों का पूरा ज़ोर लगाने पर भी कछुए के सख्त खोल पर खरोंच तक नहीं आई। लोमड़ी अपनी माँद से यह देख रही थी। उसने कछुए को बचाने की तरकीब सोची। उसने माँद से झाँककर बाहर देखा और भोलेपन के साथ बोली– तेंदुए जी, कछुए के खोल को तोड़ने का मैं आसान तरीका बताती हूँ। इसे पानी में फेंक दो। थोड़ी देर में पानी से इसका खोल नरम हो जाएगा। चाहो तो आज़माकर देख लो!

तेंदुए ने कहा– ठीक है, अभी देख लेता हूँ!

यह कहकर उसने कछुए को पानी में फेंक दिया।

बस फिर क्या था,
गया कछुआ
पानी में!

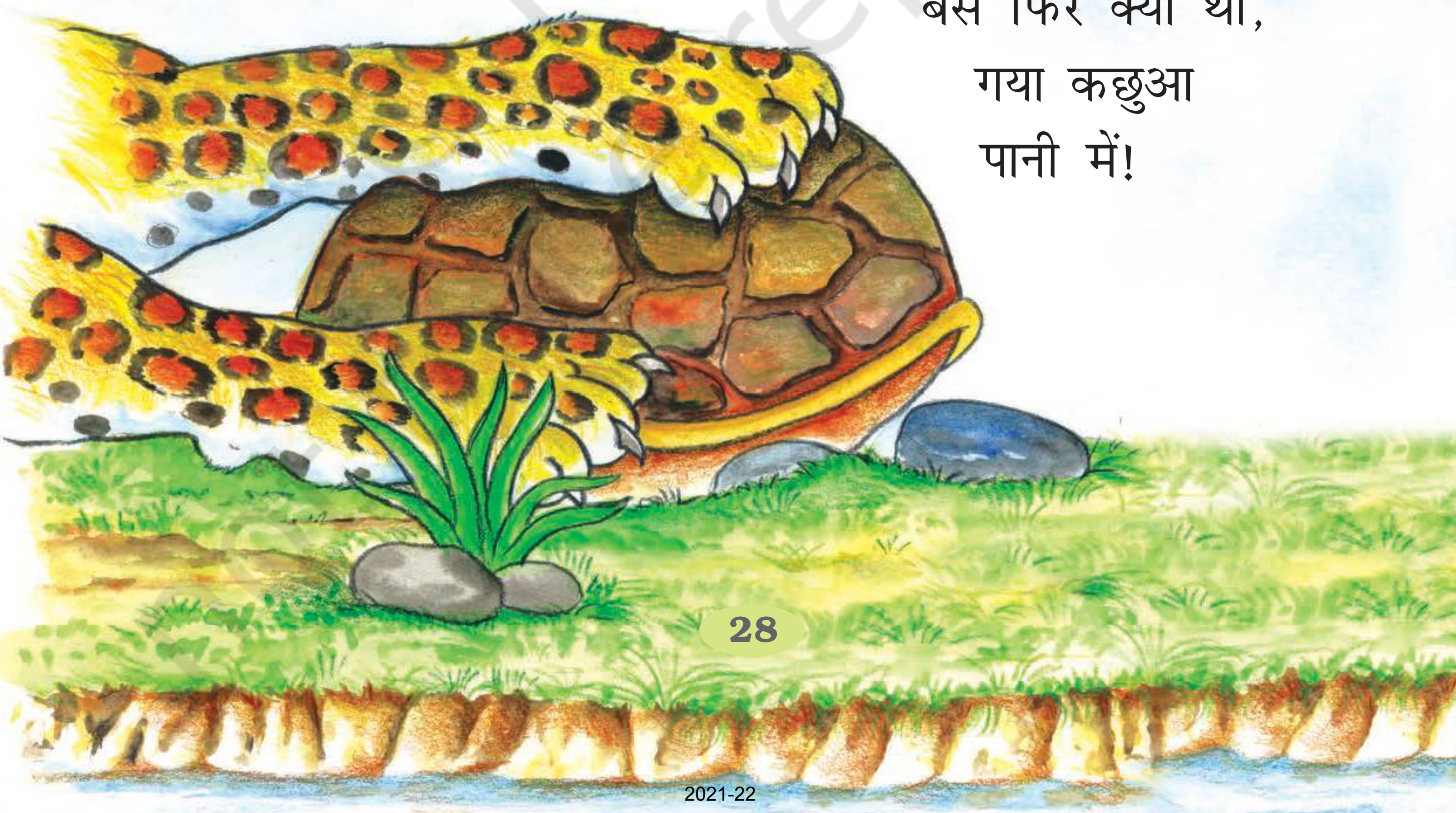

कहानी से

- लोमड़ी ने कछुए को बचाने का क्या उपाय सोचा?
- तेंदुए ने क्या मूर्खता की?
- तेंदुए की इस मूर्खता से कछुए को क्या फ़ायदा हुआ?

गपशप

जब तेंदुआ आया तब कछुआ और लोमड़ी गपशप कर रहे थे। सोचो वे क्या बातें कर रहे होंगे? यह तुम अपने दोस्त के साथ मिलकर सोचो।

सोची गई गपशप पर तुम नाटक भी कर सकते हो।

कछुआ चाल

कछुआ बहुत धीरे-धीरे चलता है। इसलिए जो बहुत धीरे चलता है उसके लिए हम कहते हैं–

वह कछुए की तरह चलता है।

अब बताओ इनके लिए क्या कहेंगे–

- जो तेज़ भागता हो।

  वह .... की तरह भागता है।

- जो बहुत अच्छा तैराक हो।

  वह .... की तरह तैरता है।

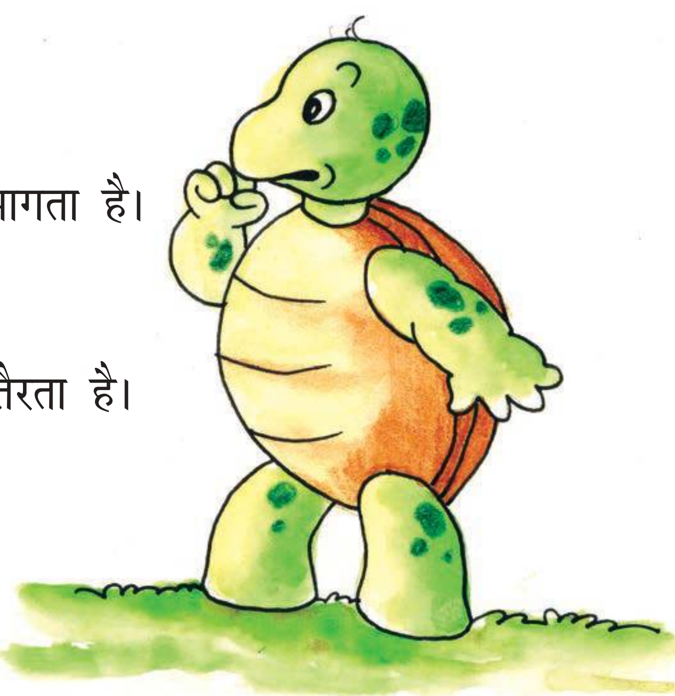

© NCERT not to be republished

तुम्हारी समझ से

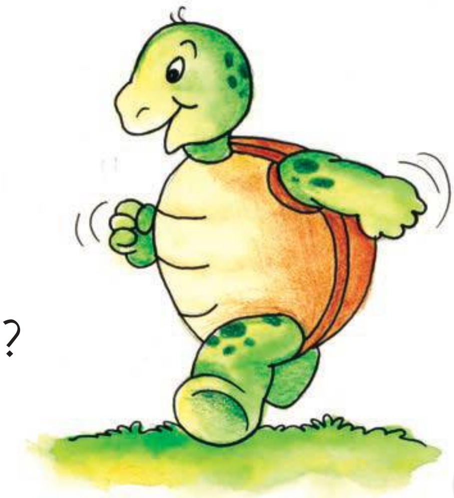

जब तेंदुए ने कछुए को पकड़ा तब
- वह क्या सोच रहा होगा?
- उसने उस समय किसे याद किया होगा?

खोल जैसा सख्त?

- बताओ कछुए के खोल जैसी सख्त चीज़ें और क्या हो सकती हैं?
- लोमड़ी ने तेंदुए को कछुए का खोल तोड़ने का आसान तरीका बताया था। क्या तुम नारियल को तोड़ने का तरीका सुझा सकते हो?

एक से अनेक

*एक **कछुआ** पानी से बाहर निकल आया।*
*तीन **कछुए** पानी से बाहर निकल आए।*

अब नीचे दिए शब्दों को बदलकर लिखो–

• एक कपड़ा	तीन	....
• एक रुपया	पंद्रह	....
• एक खंभा	चार	....
• एक पौधा	आठ	....
• एक पतीला	दो	....
• एक संतरा	दस	....

© NCERT not to be republished

किसकी चाल

बताओ, ऐसे कौन-कौन चलता है?

फुदक-फुदक कर ....

चौकड़ी भरकर ....

छलाँग लगाकर ....

रेंग-रेंग कर ....

मुलायम-नरम

लोमड़ी ने तेंदुए को बताया था कि पानी में फेंकने से कछुए का खोल मुलायम हो जाएगा।

नीचे लिखी चीज़ों में से कौन-कौन सी चीज़ें पानी में फेंकने से मुलायम हो जाएँगी? सही जगह पर लिखो।

कागज़, लकड़ी, गिलास, रोटी,
बिस्किट, प्लेट, पत्ता, मोम, रूई, पापड़

मुलायम हो जाएँगी	मुलायम नहीं होंगी
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

एक और कहानी

....

एक मगरमच्छ था। वह लोमड़ी को खाना चाहता था। पर लोमड़ी थी बहुत चालाक। वह मगरमच्छ की पकड़ में ही नहीं आती थी। मगरमच्छ ने एक बार कछुए से मदद माँगी। कछुए ने कहा—लोमड़ी हमेशा नदी पर पानी पीने आती है। क्यों न तुम उसे वहीं पकड़ लो! मगरमच्छ उस दिन नदी पर लोमड़ी का इंतज़ार करता रहा। पूरी रात काट दी। फिर पता चला कि ....

....

....

- कहानी को अपने मन से आगे बढ़ाओ।
- कहानी का अपने मन से कोई नाम रखो।

6. बहुत हुआ

0217CH06

बादल भइया
बहुत हुआ!
कीचड़–कीचड़
पानी पानी

याद सभी को
आई नानी
सारा घर
दिन रात चुआ

जाएँ कहाँ
कहाँ पर खेलें?
घर में फँसे
बोरियत झेलें
ज्यों पिंजरे में
मौन सुआ

सूरज दादा
धूप खिलाएँ
ताल नदी
सड़कों से जाएँ
तुम भी भैया
करो दुआ!

सुआ–तोता

© NCERT not to be republished

बरसात

- बारिश कहने पर तुम्हारे मन में कौन–कौन से शब्द आते हैं? सोचो और लिखो।

....

....

- जब बहुत बारिश होने लगती है तब तुम कहाँ खेलती हो? कौन–कौन से खेल खेलती हो?

....

....

....

- खूब तेज़ बारिश होगी तो तुम्हारे घर के आसपास कैसा दिखाई देगा?
- बारिश में कितना पानी बरसता है? वह सब पानी कहाँ–कहाँ जाता होगा?
- ये सब बारिश से बचने के लिए क्या करेंगे? बताओ।
  - लोग
  - कबूतर
  - केंचुआ
  - कुत्ता
  - मछली
  - मोर

not to be republished © NCERT

बहुत हुआ!

बड़े लोग ऐसा कब कहते हैं-

- बहुत हुआ, अब चुपचाप बैठो!

  जब हम ....

- बहुत हुआ, अब अंदर चलो!

  जब हम ....

- बहुत हुआ, अब सो जाओ!

  जब हम ....

- बहुत हुआ, अब टी.वी. बंद करो!

  जब हम ....

कविता से

कविता में ऐसा क्यों कहा गया होगा?

- तेज़ बारिश होने पर सड़कें नदी बन जाती हैं।
- सब ओर कीचड़ होने पर नानी याद आती है।

© NCERT not to be republished

अब नहीं बरसूँगा!

एक दिन बादल ने सोचा, मैं अब कभी नहीं बरसूँगा। जब मैं बरसता हूँ, तब भी लोग मेरी बुराई करते हैं। जब नहीं बरसता हूँ, तब भी मेरी बुराई करते हैं। आज से बरसना बिल्कुल बंद। फिर क्या हुआ होगा? कहानी को आगे बढ़ाओ।

एक चित्र कई काम

कविता के साथ जो चित्र दिया गया है, उसमें कौन क्या कर रहा है?

एक बच्चा .... *चित्र बना* .... रहा है।

दूसरा बच्चा .... रहा है।

बिल्ली .... रही है।

आदमी .... रहा है।

एक बच्ची .... रही है।

कुत्ता .... रहा है।

तुमने देखा कि चित्र में कई काम हो रहे हैं। इन वाक्यों में जो शब्द किसी काम के बारे में बता रहे हैं उनके नीचे रेखा खींचो।

इन्हें **काम वाले** शब्द कहते हैं।

2021-22

© NCERT not to be republished

काले मेघा पानी दे

काले मेघा पानी दे
पानी दे गुड़धानी दे।।

बरसो खूब झमा-झम-झम
नाचें मोर छमा-छम-छम।

खेतों से खलिहानों तक
पर्वत से मैदानों तक।

धरती को रंग धानी दे
काले मेघा पानी दे।।

भर दे सारे ताल-तलैया
गाएँ सब मिल छम्मक-छैया।

हमको नई कहानी दे
सबको दाना-पानी दे।

पानी दे ज़िंदगानी दे
काले मेघा पानी दे।।

not to be republished

2021-22

सावन का गीत

सावन का झूला इस बार
इतना बड़ा डालना
जिसमें
समा जाए संसार।
उस डाली पर
जो फैली है
आसमान के पार
उस रस्सी का
कोई न जिसका पारावार।
एक पेंग में
मंगल ग्रह के द्वार
और दूसरी में
इकदम से
अंतरिक्ष के पार।

0217CH07

7. मेरी किताब

माँ ने वीरू को एक संदेश देकर अपनी बहन के पास भेजा। मौसी ने प्यार से वीरू को अंदर बुलाया और बैठक में ले गई। बैठक में कदम रखते ही वीरू अचरज से ठिठक गई। उसने सोचा– बाप रे! इतनी सारी किताबें!

वहाँ नीचे से ऊपर तक किताबों से भरे खानों वाली दो लंबी दीवारें थीं।

वह आँखें फाड़े देखती रही।

अंत में उसने साहस करके पूछा– क्या आपके पास बच्चों के लिए भी किताबें हैं?

मौसी ने कहा– हाँ, यह देखो, यह वाला खाना और यह वाला।

वीरू ने हैरानी से कहा– इतनी ढेर सारी किताबें! मेरे पास तो इतनी किताबें नहीं हैं।

मौसी ने कहा– यदि तुम चाहो तो मैं पढ़ने के लिए तुम्हें कुछ किताबें दे सकती हूँ। तुम्हें किस तरह की किताबें सबसे अधिक पसंद हैं?

वीरू ने धीरे से कहा– मुझे मालूम नहीं।

मौसी ने एक किताब निकाल कर वीरू को पकड़ाई और कहा– तुम यह किताब पढ़कर देखो।

वीरू घबराकर पीछे हटी और बोली– बाप रे! यह तो बहुत मोटी है।

मौसी ने सुझाव दिया– अच्छा, तो फिर शायद यह वाली ठीक रहेगी।

वीरू बोली– यह बहुत बड़ी है, मेरे बस्ते में नहीं आएगी।

© NCERT not to be republished

मौसी ने एक तीसरी किताब दिखाई– और इसके बारे में क्या खयाल है?

वीरू ने किताब के पन्ने पलटे और यह फ़ैसला किया– इसमें पढ़ने के लिए बहुत कम है, इतनी छोटी-छोटी तस्वीरें! और यह किताब बहुत पतली है। मौसी ने कहा– वीरू, मुझे तो लगता है कि मैं तुम्हारे लिए किताब नहीं चुन सकती। ऐसा करना, अगली बार जब तुम आओ तो अपने साथ एक फ़ुट्टा लेती आना।

वीरू ने पूछा– फ़ुट्टा, क्यों?

मौसी ने हँसकर कहा– तुम्हें जितनी मोटी किताब चाहिए तुम नापकर ले लेना। ठीक है न!

वीरू ने माँ के भेजे हुए कागज़ को मेज़ पर रखा और भाग खड़ी हुई।

© NCERT not to be republished

बातें किताबों की

बाप रे! इतनी किताबें!

- क्या तुमने भी बहुत सारी किताबें एक साथ देखी हैं? कहाँ?
- तुम्हारे बस्ते में भी बहुत सारी किताबें होंगी। उन सभी किताबों में से तुम्हारी मनपसंद किताब कौन-सी है? क्यों?
- यहाँ कुछ किताबों के पन्नों के चित्र दिए हैं और उनके नाम लिखे हैं।

तुम इनमें से कौन-सी किताब पढ़ना चाहोगे? क्यों?

....

....

© NCERT not to be republished

नाप-तौल

(क) मौसी ने वीरू को फ़ुट्टा लाने के लिए क्यों कहा?

(ख) अलग-अलग चीज़ों को नापने या तौलने के लिए अलग-अलग चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं। तुम नीचे दी गई चीज़ों को किन चीज़ों से मापोगे?

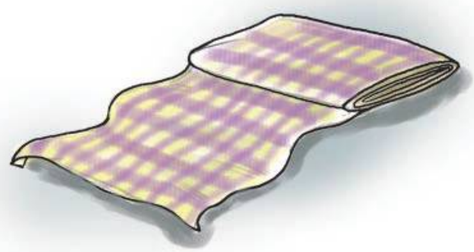

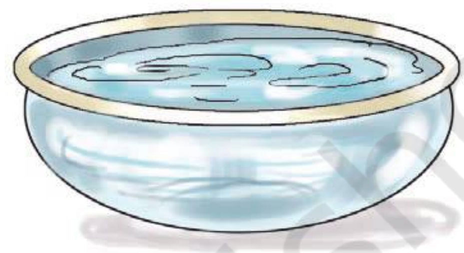

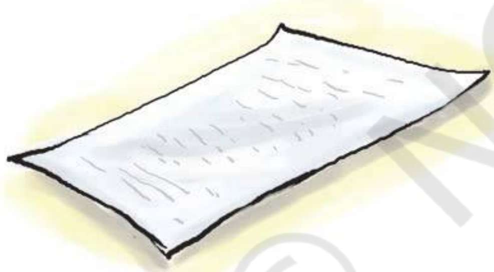

- कपड़े को ....
- आम को ....
- मेज़ को ....
- कागज़ को ....
- पानी को ....

© NCERT not to be republished

आओ खेलें अंत्याक्षरी

अब तक तो तुमने बहुत सारे शब्द सीख लिए होंगे। आओ शब्दों की अंत्याक्षरी खेलें। देखें तुम कितने शब्द बना पाते हो। शुरुआत हम कर देते हैं–

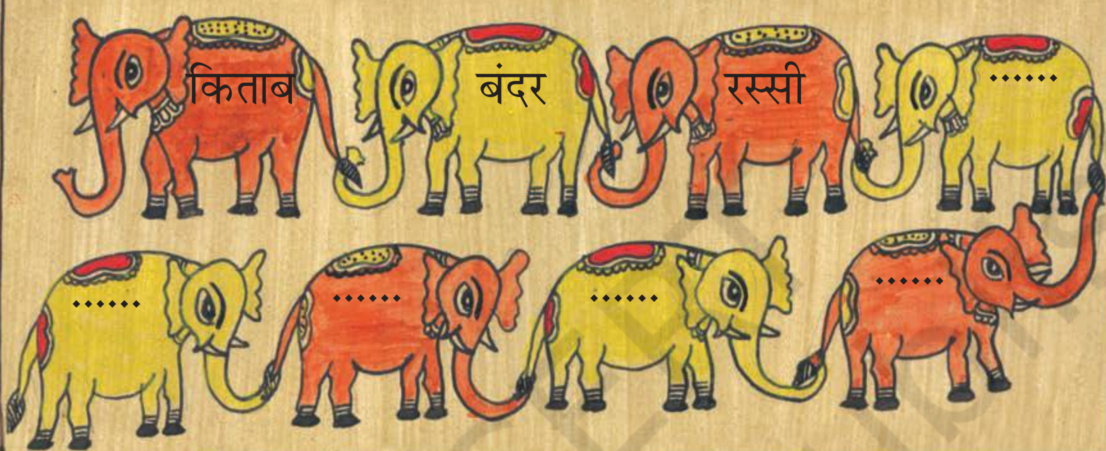

पसंद–नापसंद

वीरू को मौसी ने किताबें चुनने के लिए कहा तो वह नहीं चुन पाई।

तुम्हें अपनी पसंद की चीज़ें चुनने को कहा जाए तो तुम कौन–कौन सी चीज़ें चुनोगे?

....

....

2021-22

0217CH08

8. तितली और कली

हरी डाल पर लगी हुई थी,
नन्ही सुंदर एक कली।
तितली उससे आकर बोली,
तुम लगती हो बड़ी भली।

अब जागो तुम आँखें खोलो,
और हमारे संग खेलो।
फैले सुंदर महक तुम्हारी,
महके सारी गली गली।

कली छिटककर खिली रंगीली,
तुरंत खेल की सुनकर बात।
साथ हवा के लगी भागने,
तितली छूने उसे चली।

© NCERT not to be republished

कविता से

- तितली कली के पास क्यों गई थी?
- तितली और कली ने क्या खेल खेला?
- तितली के क्या कहने पर कली खुश हो गई?

अंदाज़ा लगाओ

- तितली कली के पास कब गई होगी?

  सुबह ☐ दोपहर ☐ शाम ☐

- तुमने समय का अंदाज़ा कैसे लगाया?

दो-दो बार

> ***गली-गली*** *का मतलब है सारी गलियाँ।*
> ***कली-कली*** *का मतलब है सारी कलियाँ।*

अब नीचे लिखे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए वाक्य बनाओ–

घड़ी–घड़ी	जगह–जगह
घर–घर	डाल–डाल

मिलते-जुलते शब्द

- कविता में से वे शब्द ढूँढ़ो जो सुनने में ***कली*** जैसे लगते हैं।
  जैसे–कली, भली
- नीचे दिए गए शब्दों जैसे कुछ शब्द अपने मन से जोड़ो।

बोली	*तितली*	*डाल*
....	....	....
....	....	....

© NCERT not to be republished

महके सारी गली-गली

- महक तुम्हें अच्छी भी लग सकती है और बुरी भी।

  अच्छी लगने वाली महक को कहेंगे ....

  बुरी लगने वाली महक को कहेंगे ....

- ऐसी चीज़ों के नाम लिखो जिनकी महक तुम्हें पसंद है और जिनकी पसंद नहीं है–

पसंद है	**पसंद नहीं है**
....	....
....	....
....	....
....	....

- तुम्हारे आसपास ऐसे कौन-कौन से फूल हैं जिनकी बहुत तेज़ महक है?
  फूलों के नाम अपनी भाषा में लिखो।
- तुम्हारे घर में किस-किस तरह की महक आती है?
  (जैसे– साबुन या तेल की महक गुसलखाने से)

© NCERT not to be republished

तुम्हारी बात

खेलने के लिए कली तुरंत जाग गई थी। तुम किस काम के लिए तुरंत जाग जाओगी और किस काम के लिए जागना पसंद नहीं करोगी? क्यों?

जागेंगे	नहीं जागेंगे
....	....
....	....
....	....
....	....

रंग-बिरंगी

हरी डाल पर लगी हुई थी
नन्ही सुंदर एक कली

कविता में पौधे की डाल हरे रंग की बताई गई है। नीचे लिखी चीज़ें किन-किन रंगों की हो सकती हैं?

.... तितली	.... सूरजमुखी
.... बैंगन	.... लड्डू
.... पेंसिल	.... प्याला
.... कुर्ता	.... साग
.... संतरा	.... मिट्टी

© NCERT not to be republished

9. बुलबुल

क्या तुमने कभी बुलबुल देखी है? बुलबुल को पहचानने का एक सरल तरीका है। यदि तुम्हें कोई चिड़िया तेज़ आवाज़ में बोलती हुई मिले तो उसकी पूँछ को देखो। यदि पूँछ के नीचे वाली जगह लाल हो तो समझो, वह चिड़िया बुलबुल है।

जब वह उड़े तो पूँछ का सिरा भी ध्यान से देखना। बुलबुल की पूँछ के सिरे का रंग सफ़ेद होता है। उसका बाकी शरीर भूरा और सिर का रंग काला होता है।

बुलबुल ऊँची आवाज़ में बोलती है। बुलबुल को हम लोगों से कोई डर नहीं लगता। तुम्हें शायद एक बुलबुल ऐसी भी मिले जिसके सिर पर काले रंग की कलगी हो। उसे सिपाही बुलबुल कहते हैं।

© NCERT not to be republished

बुलबुल पीपल या बरगद के पेड़ पर कीड़े ढूँढ़कर खाती है। वह हमारी तरह सब्ज़ी और फल भी खाती है। अमरूद के बगीचे या मटर के खेत पर बुलबुल काफ़ी ज़ोर से हमला करती है।

वह अपना घोंसला सूखी हुई घास और छोटे पौधों की पतली जड़ों से बुनती है। घोंसला अंदर से एक सुंदर कटोरे जैसा दिखता है।

बुलबुल एक बार में दो या तीन अंडे देती है। उसके अंडे हल्के गुलाबी रंग के होते हैं। तुम उन्हें ध्यान से देखो तो तुम्हें उन पर कुछ लाल, कुछ भूरी और कुछ बैंगनी बिंदियाँ दिखाई देंगी।

© NCERT not to be republished

पहचानो

इनमें से बुलबुल कौन है? उसके चित्र के ऊपर गोला लगाओ।

तुमने बुलबुल को कैसे पहचाना?

मैंने बुलबुल को पहचाना ....

....

....

सिपाही बुलबुल

- सिपाही बुलबुल के सिर पर काले रंग की कलगी होती है। ऐसे कुछ और पक्षियों के नाम सोचो जिनके सिर पर कलगी होती है। बताओ उनकी कलगी का रंग क्या होता है?

पक्षी	**कलगी का रंग**
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

2021-22

- कलगी वाली बुलबुल को सिपाही बुलबुल क्यों कहते होंगे?
- पाठ में बुलबुल के बारे में बहुत-सी बातें बताई गई हैं। उनमें से कोई तीन बातें लिखो।

....

....

....

बुलबुल और तुम

- बुलबुल अपना घर घास और जड़ों से बनाती है। तुम्हारा घर किन चीज़ों से बना है? पता करो।
- बुलबुल क्या खाना पसंद करती है? तुम्हें क्या-क्या पसंद है?
- बुलबुल ऊँची आवाज़ में बोलती है।

  तुममें से कौन-कौन ऊँची आवाज़ में बोलता है? कब-कब?

नाम	कब-कब
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

हमें पहचानो

- मैं काली हूँ। मीठा गाना गाती हूँ। ....
- मैं हरा हूँ। लाल मेरी चोंच है।
  हरी मिर्च खाता हूँ। ....
- सूप जैसे कान हैं। मोटे-मोटे पाँव हैं।
  लंबे-लंबे दाँत हैं। ....
- सिर पर ताज है। दुम पर पैसा है।
  बादल देखकर नाचता हूँ। ....
- घरों में आता हूँ।
  सारी चीज़ें कुतर जाता हूँ। ....

कविता लिखो

बुलबुल या किसी और पक्षी पर कविता लिखो। तुम अपनी सहेलियों या दोस्तों के साथ मिलकर भी कविता लिख सकते हो।

....

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

एक नाम

बुलबुल, तोता, चिड़िया, कबूतर ***पक्षी*** कहलाते हैं।
नीचे लिखी चीज़ों को क्या कहते हैं? लिखो।

	नाम
गोभी, आलू, भिंडी	....
संतरा, केला, सेब	....
गाय, हाथी, कुत्ता	....
मूँग, चना, अरहर	....

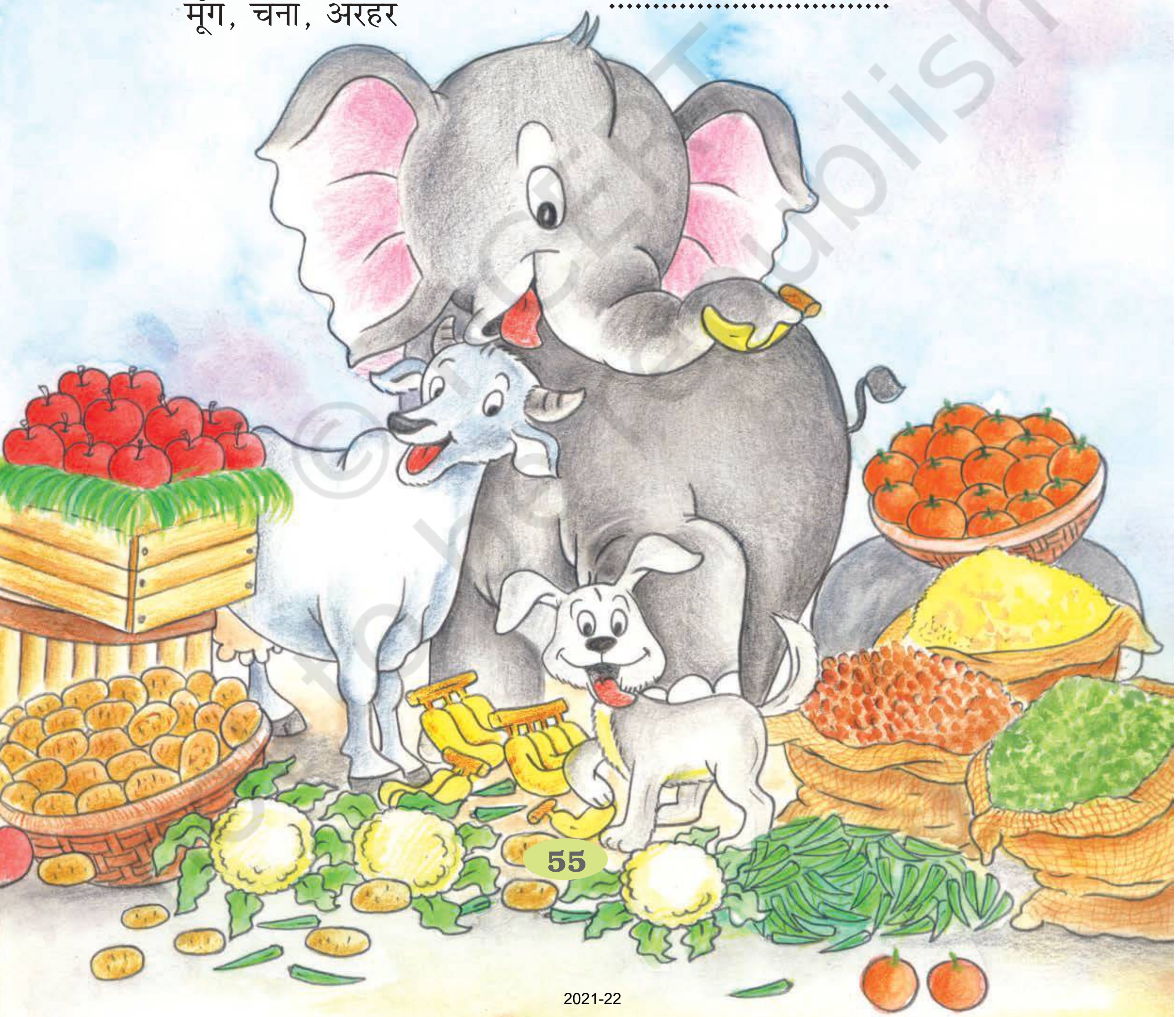

© NCERT not to be republished

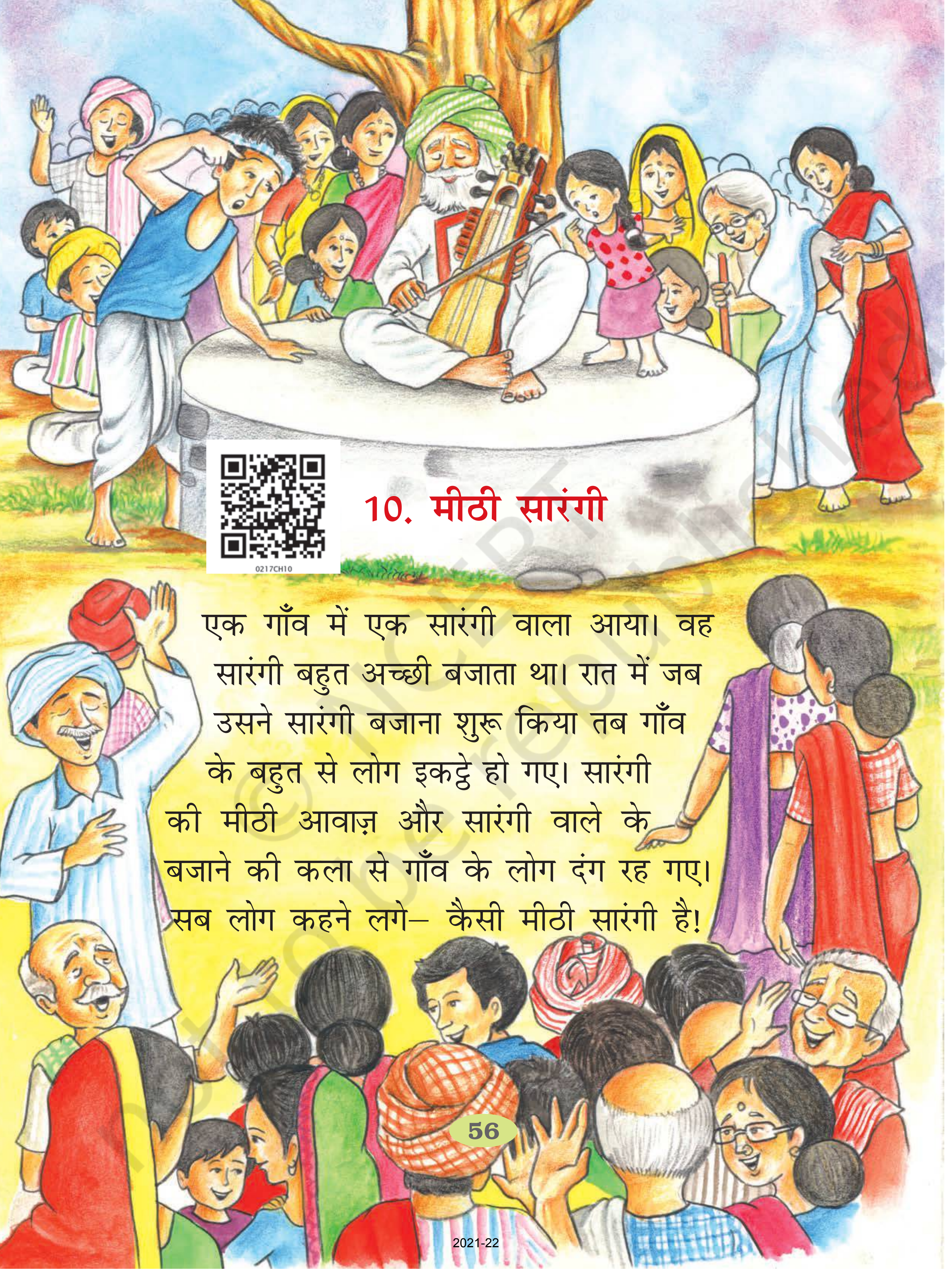

0217CH10

10. मीठी सारंगी

एक गाँव में एक सारंगी वाला आया। वह सारंगी बहुत अच्छी बजाता था। रात में जब उसने सारंगी बजाना शुरू किया तब गाँव के बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। सारंगी की मीठी आवाज़ और सारंगी वाले के बजाने की कला से गाँव के लोग दंग रह गए। सब लोग कहने लगे– कैसी मीठी सारंगी है!

अहा! कितना आनंद आ रहा है।

वहीं पास में बैठा हुआ भोला भी लोगों की ये बातें सुन रहा था। वह मन ही मन कहने लगा–इन लोगों को सारंगी बहुत मीठी लगी लेकिन मेरा तो मुँह मीठा हुआ ही नहीं। ये सब झूठे हैं।

थोड़ी देर बाद उसने सोचा कि शायद सारंगी वाले के पास बैठने से मुँह मीठा हो जाए। इसलिए वह सारंगी वाले के पास जाकर बैठ गया।

रात के तीन–चार बजे जब सारंगी वाले ने गाना–बजाना बंद कर दिया तब लोगों ने सारंगी वाले से कहा– महाराज! आपकी सारंगी बहुत ही मीठी है। हमें बड़ा ही आनंद आया। दो–चार दिन यहीं ठहरिए।

ये बातें सुनकर भोला मन ही मन झुँझलाया और सोचने लगा– ये लोग झूठ तो नहीं बोल सकते। सारंगी मीठी ज़रूर है पर मुझे न जाने स्वाद क्यों नहीं आया।

तब तक रात ज़्यादा हो गई थी। इस कारण लोग घर नहीं गए। वहीं चौपाल में सो गए। सारंगी वाले ने भी सारंगी पर खोली चढ़ाई और उसे अपने सिरहाने रख कर सो गया। पर भोला को चैन कहाँ था? जब लोग नींद में खर्राटे लेने लगे तब उसने चुपके से उठकर वह सारंगी उठा ली और ऊपर का खोल उतार कर उसे जीभ से चाटा। कुछ स्वाद नहीं

आया। अब उसने सारंगी को खूब हिलाया। उसके छेद को मुँह के पास लगाकर मुँह में उँड़ेला। पर सारंगी से एक भी मीठी बूँद नहीं निकली। वह लोगों की बेवकूफ़ी पर बहुत ही झुँझलाया। अब की बार उसने सारंगी को गाँव से बाहर दूर ले जाकर फेंक दिया। वह लोगों की बेवकूफ़ी पर हँसता हुआ अपनी जगह पर आकर चुपचाप सो गया।

सवेरा होने पर जब सारंगी अपनी जगह पर नहीं मिली तो सब लोग और सारंगी वाला बड़े दुखी हुए। लोग कहने लगे– बड़ी मीठी सारंगी थी। पता नहीं कौन ले गया।

भोला इस बात को न सुन सका और गुस्से से बोला– क्या खाक मीठी थी! मैंने तो उसे अच्छी तरह चाटा था। उसमें ज़रा भी मिठास नहीं थी। तुम सब लोग झूठे हो और बाबाजी की खुशामद करते हो।

लोगों ने पूछा– पर सारंगी है कहाँ?

उसने कहा– गाँव के बाहर पड़ी है।

लोगों ने भोला की बेवकूफ़ी पर सिर पीट लिया।

सारंगी की मिठास

- *गाँव वाले कहते थे– कैसी मीठी सारंगी है!*

इसका क्या मतलब है? सही बात पर (✓) निशान लगाओ।

- [ ] सारंगी चखने पर मीठी थी।
- [ ] सारंगी से निकलने वाली आवाज़ सुनने में अच्छी लगती थी।
- [ ] सारंगी के आस-पास मधुमक्खियाँ भिनभिना रही थीं।

- अब तुम समझ गए होगे कि गाँव वाले सारंगी को मीठी क्यों कहते थे। अब बताओ कड़वी बात का क्या मतलब होगा?

कहानी से

- भोला ने क्यों सोचा कि सभी झूठ बोल रहे हैं?
- भोला को सारंगी का स्वाद क्यों नहीं आया?
- भोला ने किस-किस तरह से यह जानने की कोशिश की कि सारंगी मीठी है?

खोल

सारंगी वाले ने सारंगी पर खोल चढ़ाया और अपने सिरहाने रखकर सो गया।

- सारंगी वाले ने अपनी सारंगी पर खोल क्यों चढ़ाया होगा?
- और किन-किन चीज़ों पर खोल चढ़ाया जाता है?

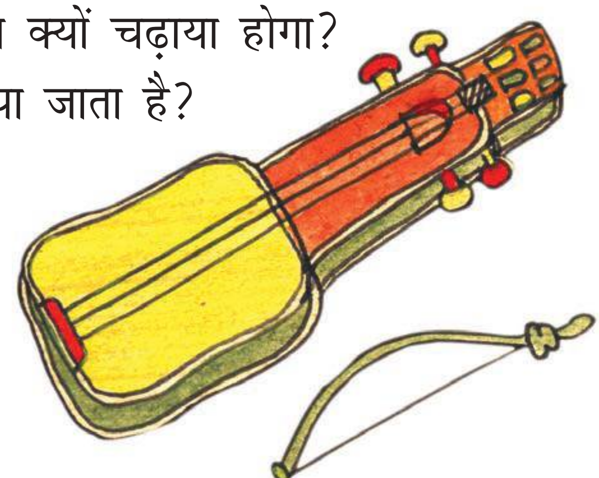

© NCERT not to be republished

गाओ-बजाओ

सारंगी, ढोलक, इकतारा, तबला, बाँसुरी,
शहनाई, डफली, सितार, गिटार, हारमोनियम

- ऊपर संगीत के बाजों के नाम लिखे हैं। इनमें से कुछ तार छेड़ कर बजाए जाते हैं और कुछ हाथ से थाप दे कर। इनके नाम सही जगह पर लिखो।

तार वाले	थाप वाले	अन्य
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

कुछ नाम बच भी गए होंगे। उन्हें ***अन्य*** के नीचे लिखो।

- ऊपर लिखे बाजों को जगह-जगह पर बजाया जाता है। सोच कर लिखो इन जगहों पर क्या-क्या बजाया जाता है–

  रेलगाड़ी या बस में ....

  घर पर किसी अवसर पर ....

  भजन-कीर्तन में ....

  स्कूल में किसी अवसर पर ....

© NCERT not to be republished

चटखारे

- इस कहानी में मिठास की बात है। तुम्हें कौन-कौन सी मीठी चीज़ें अच्छी लगती हैं?
- क्या खाने की चीज़ें सिर्फ़ मीठी ही होती हैं? मीठे के अलावा उनका और क्या-क्या स्वाद होता है?
- अब नीचे लिखी खाने-पीने की चीज़ों को स्वाद के हिसाब से लगाओ–

आम, मिर्च का अचार, जलज़ीरा, नींबू, शहद, चीनी, नमक, दूध, आँवला, करेला, अदरक

....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

तुम इस तालिका में कुछ नाम अपने मन से भी जोड़ सकते हो।

- नीचे लिखे शब्दों को बोलकर देखो–

बाँसुरी　　बंसी　　हँस　　हंस

- अब नीचे दिए गए शब्दों में (ँ) या (ं) लगाओ–

चाद	चदन	झासी	झझट
मगलवार	मागना	ककड़	कापना
सुदर	साप	अधा	आधी

© NCERT not to be republished

0217CH11

11. टेसू राजा बीच बाज़ार

टेसू राजा बीच बाज़ार,
खड़े हुए ले रहे अनार।

इस अनार में कितने दाने?
जितने हों कंबल में खाने।

कितने हैं कंबल में खाने?
भेड़ भला क्यूँ लगी बताने!

एक झुंड में भेड़ें कितनी?
एक पेड़ पर पत्ती जितनी।

© NCERT
not to be republished

एक पेड़ पर कितने पत्ते?
जितने गोपी के घर लत्ते।

गोपी के घर लत्ते कितने?
कलकत्ते में कुत्ते जितने।

बीस लाख तेईस हज़ार,
दाने वाला एक अनार।

टेसू राजा कहें पुकार,
लाओ मुझको दे दो चार।

© NCERT not to be republished

गिनत-अनगिनत

कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जिन्हें गिना जा सकता है और कुछ चीज़ों को नहीं।

जिन चीज़ों को गिन सकती हो उनके आगे **हाँ** लिखो।

जिन्हें नहीं गिन सकती हो उनके आगे **नहीं** लिखो।

कंबल के खाने	....	पेड़ के पत्ते	....
सिर के बाल	....	आसमान के तारे	....
घर के लोग	....	कॉपी के पन्ने	....
चींटी के पैर	....	अपने कपड़े	....
कमीज़ के बटन	....	स्कूल के बच्चे	....

कवि बन जाओ तुम

- नीचे दी गई कविता को ध्यान से पढ़ो–

एक पेड़ पर कितने पत्ते?
जितने गोपी के घर लत्ते।
गोपी के घर लत्ते कितने?
कलकत्ते में कुत्ते जितने।

अब तुम कविता को आगे बढ़ा कर लिखने की कोशिश करो।

....

....

© NCERT not to be republished

तुम्हारा अंदाज़ा

बीस लाख तेईस हज़ार
दाने वाला एक अनार।

क्या सचमुच अनार में इतने दाने होते हैं?

अंदाज़े से बताओ–

- एक अनार में कितने दाने होते होंगे?
- एक मटर में कितने दाने होते होंगे?
- एक भुट्टे में कितने दाने होते होंगे?
- एक मूँगफली में कितने दाने होते होंगे ?

मौका मिलने पर ज़रूर जाँच करना कि तुम्हारा अंदाज़ा कितना सही था।

हाट-बाज़ार

(क) टेसू राजा बाज़ार अनार लेने गए थे।

- तुम बाज़ार क्या-क्या लेने जाती हो?
- बाज़ार कैसे जाती हो?
- उस बाज़ार का क्या नाम है?
- अपने घर के पास के कुछ और बाज़ारों के नाम पता करो।

(ख) बाज़ार अलग-अलग तरह के होते हैं।

जैसे- मंडी, हाट, सोम बाज़ार, मॉल, पैंठ, किनारी बाज़ार आदि।

कक्षा में बात करो कि इन सब बाज़ारों में क्या अंतर है। तुम्हारे घर के पास में किस तरह के बाज़ार हैं।

© NCERT not to be republished

फेर-बदल

जितने हों कंबल में खाने।

इस वाक्य को इस तरह भी लिख सकते हैं

कंबल में जितने खाने हों।

इसी तरह नीचे लिखे वाक्यों को बदलकर लिखो–

- कितने हैं कंबल में खाने?

  ....

- एक झुंड में भेड़ें कितनी

  ....

- टेसू राजा कहे पुकार, लाओ मुझको दे दो चार।

  ....

- फूलों से बनाओ होली के रंग

  ....

© NCERT not to be republished

किसके नाम

टेसू राजा बीच बाज़ार,
खड़े हुए ले रहे अनार

अनार, आम, अमरूद, पपीता– ये सब फलों के नाम हैं।
बताओ ये सब किसके नाम हैं?

कोलकाता, दिल्ली, भोपाल ....

भेड़, बकरी, हाथी ....

कमीज़, कुरता, साड़ी ....

मोर, कबूतर, उल्लू ....

आलू, बैंगन, भिंडी ....

बाज़ार–बाजा

इन शब्दों को बोलकर देखो। **ज़ा** और **जा** बोलने में अलग–अलग लगते हैं न! नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। उन्हें बोलो और खोजो कि अक्षर के नीचे बिंदु होने और न होने से आवाज़ में क्या फ़र्क पड़ता है।

दो–दो शब्द खुद जोड़ो।

जाड़ा	ज़मीन
गाजर	ज़िद
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

टेसू

टेसूरा टेसूरा घंटार बजाइयो
नौ नगरी, दस गाँव बसइयो
बस गए तीतर, बस गए मोर
बूढ़ी डुकरिया लै गए चोर
चोरन के घर खेती भई
खाय डुकरिया मोटी भई
मोटी हैके पीहर गई
पीहर में मिले भाई भौजाई
सबने मिलकै दई बधाई

© NCERT not to be republished

टेसू एक प्रसिद्ध उत्सव और खेल है। यह दशहरे के दिनों में मनाया जाता है। इस त्योहार में लड़कों की टोली टेसू लेकर घर-घर जाती है और गाती है–

टेसू आए घर के द्वार
खोलो रानी चंदन किवार ...

बाँस की तीन खप्पच्चियों को बीच से बाँधकर डमरू जैसे आकार में टेसू बनाया जाता है। इस आकृति के एक छोर की खप्पच्चियों पर टेसू का सिर तथा हाथ मिट्टी से बनाए जाते हैं जबकि दूसरे छोर पर तीन पैर बनाए जाते हैं। मिट्टी सूख जाने पर रंग से कान, नाक, आँख, मुँह तथा हाथ-पैरों की उँगलियाँ बनाई जाती हैं। हाथों पर या खप्पच्चियों के जोड़ पर दीया जलाया जाता है। टेसू बाज़ार में बना हुआ भी मिलता है।

लोगों का टेसू के प्रति व्यवहार अलग-अलग होता है। कुछ लोग अच्छी तरह स्वागत करते हैं तो कुछ लोग दरवाज़ा ही नहीं खोलते पर टेसू की फ़ौज यानी लड़कों की टोली, डटी रहती है। टोली के सदस्य बारी-बारी से गीत गाते हैं। फिर भी अगर कोई दरवाज़ा न खोले तो अगले दिन आने का वादा करके आगे बढ़ जाते हैं। टेसू की फ़ौज अधिक कुछ नहीं माँगती-बस थोड़ा सा अनाज, पैसे या दीपक में जलाने के लिए तेल।

यह त्योहार पाँच दिन तक चलता है।

शिक्षक टेसू के बारे में बच्चों के साथ बातचीत करें। बच्चों से घरों में गाए जाने वाले लोकगीत भी सुने जा सकते हैं।

not to be republished © NCERT

0217CH12

12. बस के नीचे बाघ

किसी जंगल में एक छोटा बाघ खेल रहा था। खेलते-खेलते वह जंगल के पास वाली सड़क पर निकल आया। सड़क पर एक बस खड़ी थी।

छोटे बाघ ने देखा कि बस का दरवाज़ा खुला है। बाघ अपने अगले पंजे बस की सीढ़ी पर रखकर बस के भीतर देखने लगा।

उसने देखा कि बस के भीतर आगे की तरफ़ से घर्र-घर्र की आवाज़ आ रही है और उसके पास एक आदमी बैठा

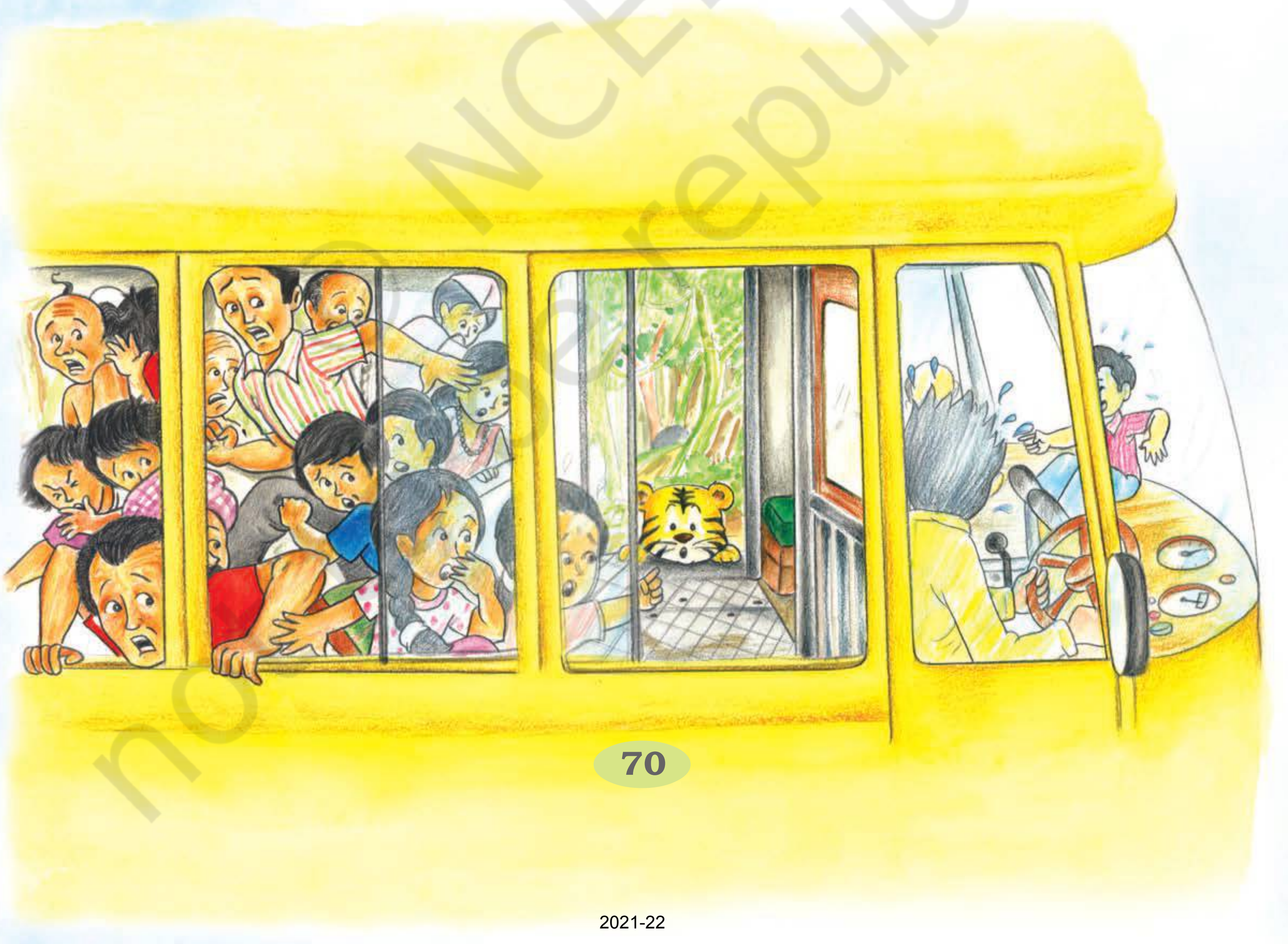

© NCERT not to be republished

है। छोटे बाघ ने यह भी देखा कि उस आदमी के सामने एक दीवार-सी है। लेकिन यह दीवार कुछ अजीब थी। इस दीवार में से बाहर की हर चीज़ साफ़-साफ़ दिखाई दे रही थी।

बाघ ने अपना सिर दाहिनी तरफ़ मोड़ा। उसने देखा कि बस में कई लोग बैठे हैं। आगे वाली सीट पर दो छोटी लड़कियाँ बैठी थीं।

अचानक छोटे बाघ को लगा कि लोग उससे डर रहे हैं और उसे भगाना चाहते हैं। तभी सामने की सीट पर बैठा आदमी उठा और अपनी दाहिनी ओर वाला दरवाज़ा खोलकर बाहर कूद गया।

बस के बाकी लोग भी तेज़ी से पीछे वाले दरवाज़े की तरफ़ भागने लगे।

लोगों को भागते देखकर छोटा बाघ कुछ घबराया। वह सीढ़ी से उतरा और बस के नीचे घुस गया। नीचे पहुँचकर वह बस के आगे वाले पहिए के पास जाकर दुबक गया।

लेकिन वहाँ उसे अच्छा नहीं लगा। वह फिर से बस के भीतर जाना चाहता था। थोड़ी देर बाद वह बाहर निकला और बस की सीढ़ी पर पंजे रखकर भीतर चला गया। वह सामने वाली सीट पर बैठकर बाहर देखने लगा।

2021-22

© NCERT not to be republished

सामने से एक बस आ रही थी। उसमें बहुत सारे लोग बैठे थे। उन्हें देखकर छोटा बाघ सोचने लगा कि उसकी बस के लोग क्यों भाग गए।

not to be republished

ऐसा क्यों?

- बस के नीचे पहुँचकर छोटे बाघ को अच्छा क्यों नहीं लगा?
- क्या तुमने कभी किसी बस या जीप से नीचे झाँककर देखा है? तुम्हें वहाँ क्या दिखाई दिया?
- बस के अगले हिस्से से घर्र-घर्र की आवाज़ क्यों आ रही थी?
- बस में ज़्यादातर लोग दायीं तरफ़ क्यों बैठे थे?
- बस में इतने सारे लोग बैठे थे पर बाघ का ध्यान दो छोटी लड़कियों पर ही गया। क्यों ?

तो क्या होता

अगर बाघ बस की छत पर चढ़ जाता तो

- उसे दुनिया कैसी दिखाई देती?
- आसपास के लोग क्या करते?

करके बताओ

बाघ दुबककर बैठ गया था। करके बताओ, नीचे लिखे काम वह कैसे करेगा?

दुबकना	कीचड़ में चलना
काँपना	दूध पीना
लड़खड़ाना	नहाना
सोना	दवाई खाना

© NCERT not to be republished

क्या समझे?

सामने की सीट पर बैठा आदमी उठा और अपनी दाहिनी ओर वाला दरवाज़ा खोलकर बाहर कूद गया।

- यह व्यक्ति कौन था?
- बस में कितने दरवाज़े थे?
- आगे क्या हुआ होगा? कहानी सुनाओ।

डर-निडर

(क) बस में बैठे लोग बाघ के बच्चे से डर रहे थे। बाघ भी उन लोगों से डर रहा था।

सोचो, इन्हें कैसा लगता होगा जब कोई इनसे डर जाता है-

- छिपकली
- कुत्ता
- चूहा
- साँप

(ख) बाघ डरकर बस के नीचे दुबक गया। तुम डर लगने पर क्या करते हो? कहाँ दुबकते हो?

(ग) बाघ से सब डरते हैं, पर इस कहानी में लोग बाघ के बच्चे से भी डर गए? ऐसा क्यों हुआ?

अनोखी दीवार

बस के सामने वाली दीवार अलग तरह की थी। उसके आर-पार देखा जा सकता था।

- वह दीवार क्या थी?
- किन-किन चीज़ों के आर-पार देखा जा सकता है?
- किन-किन चीज़ों के आर-पार नहीं देखा जा सकता?

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

आओ शब्दों की अंत्याक्षरी खेलें।

अंत्याक्षरी की शुरुआत हम कर देते हैं। उसे आगे बढ़ाओ।

बाघ ⟶ घर ⟶ रुमाल ⟶ लेकिन ....

कहानी से आगे

तुम्हारे घर या स्कूल के आसपास कौन-कौन से जानवर या पक्षी नज़र आते हैं? पता करो।

जानवर ....

पक्षी ....

कितने पहिए

कुछ गाड़ियों में दो पहिए होते हैं, कुछ में तीन और कुछ में चार। कक्षा में बातचीत करो और नीचे सही खानों में गाड़ियों के नाम लिखो।

दो पहिए	तीन पहिए	चार पहिए
....	....	....
....	....	....
....	....	....

© NCERT not to be republished

तेंदुए की खबर

मुंबई, 12 मार्च

मंगलवार की सुबह तेंदुए का एक बच्चा बस में पहुँच गया। इससे पहले कि तेंदुए का बच्चा बस में चढ़ता चालक डरकर भाग गया। देखते ही देखते लोगों की अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई। इनमें से कुछ लोग तो अपने बचाव के लिए कुल्हाड़ी और लाठी भी लेकर आए थे। भीड़ और शोरगुल से घबराकर चार महीने का वह तेंदुए का बच्चा बस के नीचे छुप गया।

9.00 बजे जाकर पुलिस, फायर–ब्रिगेड और बोरीवली पार्क के जानवरों के डॉक्टर, डॉ. रणधीर बरहट्टे उस जगह पहुँचे। सभी ने मिलकर उसे बाहर निकालने की बहुत कोशिश की पर वह टस से मस न हुआ। हारकर डा. बरहट्टे ने बेहोशी की दवा की सुई तैयार की और एक लंबे पाइप से फूँककर तेंदुए के बच्चे को लगाई। बेहोश होने के बाद

उसे बोरे में लपेटकर जीप में बोरीवली पार्क ले जाया गया। आँख खुलने पर उसने अपने आप को एक पिंजरे में पाया।

2021-22

खबर की बात

(क) क्या तुम बता सकते हो कि
- यह घटना किस जगह घटी?
- घटना किस दिन घटी?
- उस दिन क्या तारीख थी?

(ख) तुमने तेंदुए के बच्चे की यह खबर पढ़ी। तुम्हारे घर आस-पड़ोस या स्कूल में आनेवाले कुछ अखबारों के नाम पता करो और लिखो।

....

....

....

....

बस तक कैसे पहुँचा?

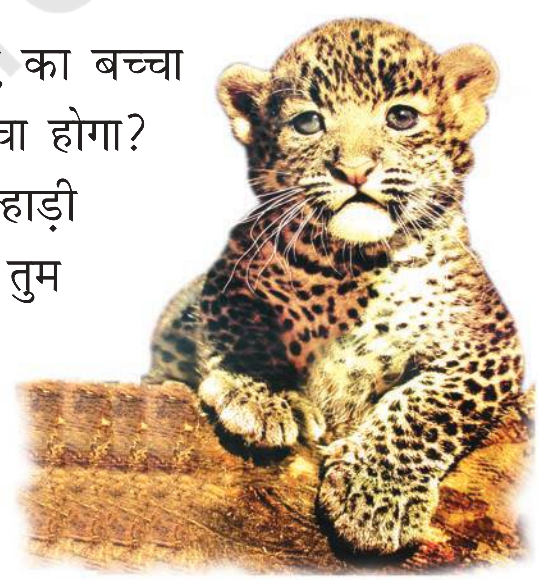

- तुम्हारे विचार से यह तेंदुए का बच्चा बस के पास कहाँ से पहुँचा होगा?
- कुछ लोग लाठी और कुल्हाड़ी लेकर क्यों पहुँच गए थे? तुम होते तो क्या करते?

© NCERT not to be republished

अखबारों के लिए

(क) क्या तुम अपनी कक्षा या घर की किसी घटना को एक खबर की तरह समाचार पत्र के लिए लिख सकते हो।
जगह, दिन, तारीख, लिखना मत भूलना।
यह घटना कुछ भी हो सकती है जैसे–

- किसने किससे की लड़ाई
- खोज–खोज कर मैं तो हारी, चीज़ हो गई गुम
- घर में शादी, वाह भाई वाह!
- कौन हारा कौन जीता!

(ख) यहाँ नीचे बाघ का चित्र दिया गया है। तुम भी अपनी पसंद का कोई जानवर बनाकर उनमें इसी तरह के डिज़ाइन बनाओ और रंग भरो।

- चित्र के बारे में बच्चों से बातचीत करें। उन्हें बताएँ कि यह चित्र मध्यप्रदेश की गोंडी शैली में बना है।

© NCERT not to be republished

बाघ का बच्चा

रस्ता पक्का हो या कच्चा,
चलता उस पर बाघ का बच्चा।

कभी उछलता कभी कूदता,
धूम मचाता बाघ का बच्चा।

बाल पूँछ के और मूँछ के,
लहराता है बाघ का बच्चा।

पंजे अपने कहीं अड़ाता,
सुस्ताता है बाघ का बच्चा।

माँ जब चलती वह चल पड़ता,
कभी कहीं वह गिरता पड़ता।

© NCERT not to be republished

पानी में भी उछल तैर कर,
चलता जाता बाघ का बच्चा।

बड़ा बहादुर बाघ का बच्चा।
घबराता ना बाघ का बच्चा।

घूम–घूम कर दूर–दूर तक,
हो आता है बाघ का बच्चा।

पेट पीठ पर भूरी काली,
धारी–धारी बड़ी निराली।

चलता आता चलता आता,
गुर्राता है बाघ का बच्चा।

© NCERT not to be republished

13. सूरज जल्दी आना जी!

0217CH13

एक कटोरी, भर कर गोरी
धूप हमें भी लाना जी।
सूरज जल्दी आना जी।

जमकर बैठा यहाँ कुहासा
आर–पार न दिखता है।
ऐसे भी क्या कभी किसी के
घर में कोई टिकता है?
सच–सच ज़रा बताना जी।
सूरज जल्दी आना जी।

कल की बारिश में जो भीगे
कपड़े अब तक गीले हैं।
क्या दीवारें, क्या दरवाज़े
सब के सब ही सीले हैं।
छोड़ो आज बहाना जी।
ना...ना...ना–ना...ना–ना–जी।
सूरज जल्दी आना जी।

© NCERT not to be republished

रंगों की बात

कविता में धूप का रंग गोरा बताया गया है। तुम्हें धूप का रंग कैसा लगता है?

धूप कब नहीं सुहाती

कौन-से मौसम में धूप बिल्कुल नहीं सुहाती।
तब तुम धूप से बचने के लिए क्या-क्या करती हो?

- छाता लेकर जाते हैं।
- ....
- ....
- ....
- ....

शब्दों का मेल

नीचे दिए शब्दों के आगे चार-चार शब्द लिखे हैं। इन चारों में से एक-एक शब्द अलग है। बताओ कि अलग शब्द कौन-सा है? वह शब्द बाकी सबसे अलग क्यों है?

बारिश – पानी, गीला, बादल, पटना

घर – दरवाज़ा, खिड़की, साबुन, दीवार

सूरज – धरती, धूप, पसीना, गरमी

कटोरी – कड़ाही, तश्तरी, चूल्हा, गिलास

© NCERT not to be republished

अगर ऐसा हो

- अगर धूप न हो तो क्या होगा?

....

....

- अगर हवा न हो तो क्या होगा?

....

....

- अगर पानी न हो तो क्या होगा?

....

....

- अगर पेड़-पौधे न हों तो क्या होगा?

....

....

कौन-सा बहाना

सूरज का अभी आने का मन नहीं है। वह बच्चों को क्या बहाने बनाकर मना करेगा?

आज ....

© NCERT not to be republished

कुहासा

कुहासे का मतलब है **कोहरा** या **धुँध**। कोहरा किस मौसम में छा जाता है?

....

सूख जा भई सूख जा

मान लो कल स्कूल से घर आते हुए तुम तेज़ बारिश में भीग गईं। तुम इन्हें कहाँ सुखाओगी?

तुम्हारी ये चीज़ें कितने समय में सूखेंगी?

- कमीज़
- बस्ता
- जूते

फ़र्क पहचानो

फ़ीता–फीका

फ़ीता और फीका दोनों शब्दों में अंतर है न! इन्हें बोला भी अलग–अलग तरह से जाता है। पहले **फ़ी** में बिंदी लगी है जबकि दूसरे **फी** में बिंदी नहीं है। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। उन्हें बोल और सुनकर अंतर समझो। दोनों तरह का एक–एक शब्द खुद भी जोड़ो।

काफ़ी	फिर
सफ़ेद	फैलना
तारीफ़	फटना
....	....

2021-22

© NCERT not to be republished

14. नटखट चूहा

बच्चो, एक था चूहा। बहुत ही नटखट और बड़ा ही चालाक। कुछ न कुछ शरारत करने का उसका हमेशा मन करता रहता था।

एक दिन उसने अपने दिल में सोचा– आज मैं शहर जाऊँगा। बारिश के कारण बिल से बाहर निकले बहुत दिन बीत गए हैं। घर में बैठे-बैठे दिल घबरा गया है।

नटखट चूहा झटपट तैयार होकर शहर की ओर निकल पड़ा। वह मस्ती से झूमता हुआ चला जा रहा था कि रास्ते में उसे एक बड़ी-सी कपड़े की दुकान दिखाई दी। दुकानदार अपनी दुकान खोलकर अंदर जा ही रहा था कि नटखट चूहा भी चुपचाप उसके पीछे अंदर चला गया। जैसे ही दुकानदार अपनी जगह पर बैठा, उसकी नज़र चूहे पर पड़ी।

दुकानदार ने कहा– अरे, तू मेरी दुकान में क्या कर रहा है? चल भाग यहाँ से।

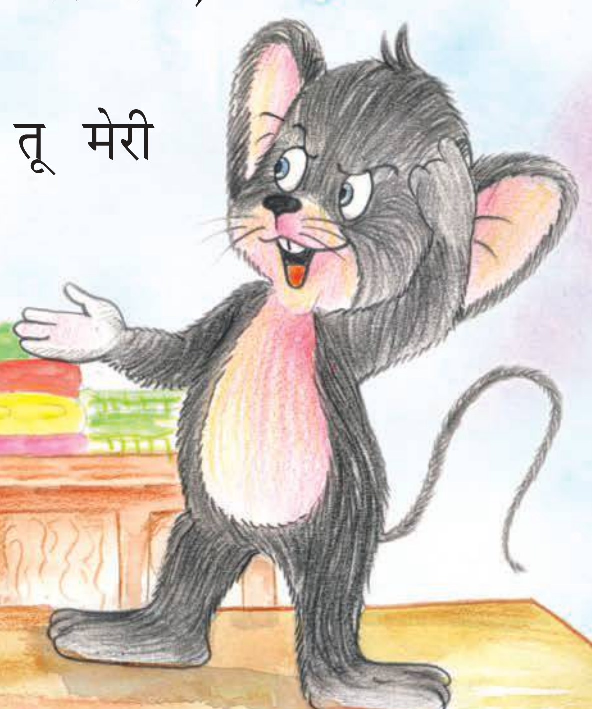

© NCERT not to be republished

चूहा बोला– मैं अपनी टोपी के लिए कुछ कपड़ा खरीदने आया हूँ।

दुकानदार हँसा– हा, हा! हट यहाँ से। मैं चूहों को कुछ नहीं बेचता।

चूहा गुस्से में बोला– तुम मुझे कपड़ा नहीं बेचोगे?

दुकानदार बोला– भाग यहाँ से। बेकार मेरा समय बर्बाद न कर।

चूहा चिल्लाया– तुम मुझे कपड़ा देते हो या नहीं? दुकानदार बोला– नहीं, बिल्कुल नहीं।

इस बार नटखट चूहे ने गाना गाया–

रातों रात मैं आऊँगा
अपनी सेना लाऊँगा
तेरे कपड़े कुतरूँगा

दुकानदार डर कर बोला– चूहे भैया, ऐसा न करना, मैं अभी तुम्हें रेशमी कपड़े का टुकड़ा देता हूँ।

और उसने चूहे को रेशमी कपड़े का टुकड़ा दे दिया। कपड़ा लेकर चूहा उछलता-कूदता दुकान से बाहर निकल गया। फिर वह एक दर्ज़ी की दुकान में आ पहुँचा।

चूहे ने कहा– दर्ज़ी जी, मुझे तुमसे कुछ काम है।

काम! क्या काम?– दर्ज़ी ने गुस्से से पूछा।

चूहे ने दर्ज़ी को रेशमी कपड़ा दिया और कहा– कृपया इस कपड़े की एक अच्छी टोपी सिल दो।

© NCERT not to be republished

दर्ज़ी हँसा।

चल हट यहाँ से, मेरा समय खराब न कर। मेरे पास तेरा काम करने का समय नहीं है– दर्ज़ी ने कहा।

अब चूहे को गुस्सा आ गया।

वह ज़ोर से चिल्लाया– तुम मेरी टोपी सिलोगे या नहीं?

नहीं, नहीं, नहीं– दर्ज़ी ने कहा।

तो ठीक है– चूहा बोला और गाने लगा

रातों रात मैं आऊँगा
अपनी सेना लाऊँगा
तेरे कपड़े कुतरूँगा

दर्ज़ी ने कहा– चूहे भैया, ऐसा न करना, मैं अभी तुम्हारी टोपी बनाता हूँ।

और थोड़ी ही देर में दर्ज़ी ने चूहे के लिए एक सुंदर-सी रेशमी टोपी तैयार कर दी। नटखट चूहे ने उसे पहना और फिर अपना चेहरा आइने में देखा।

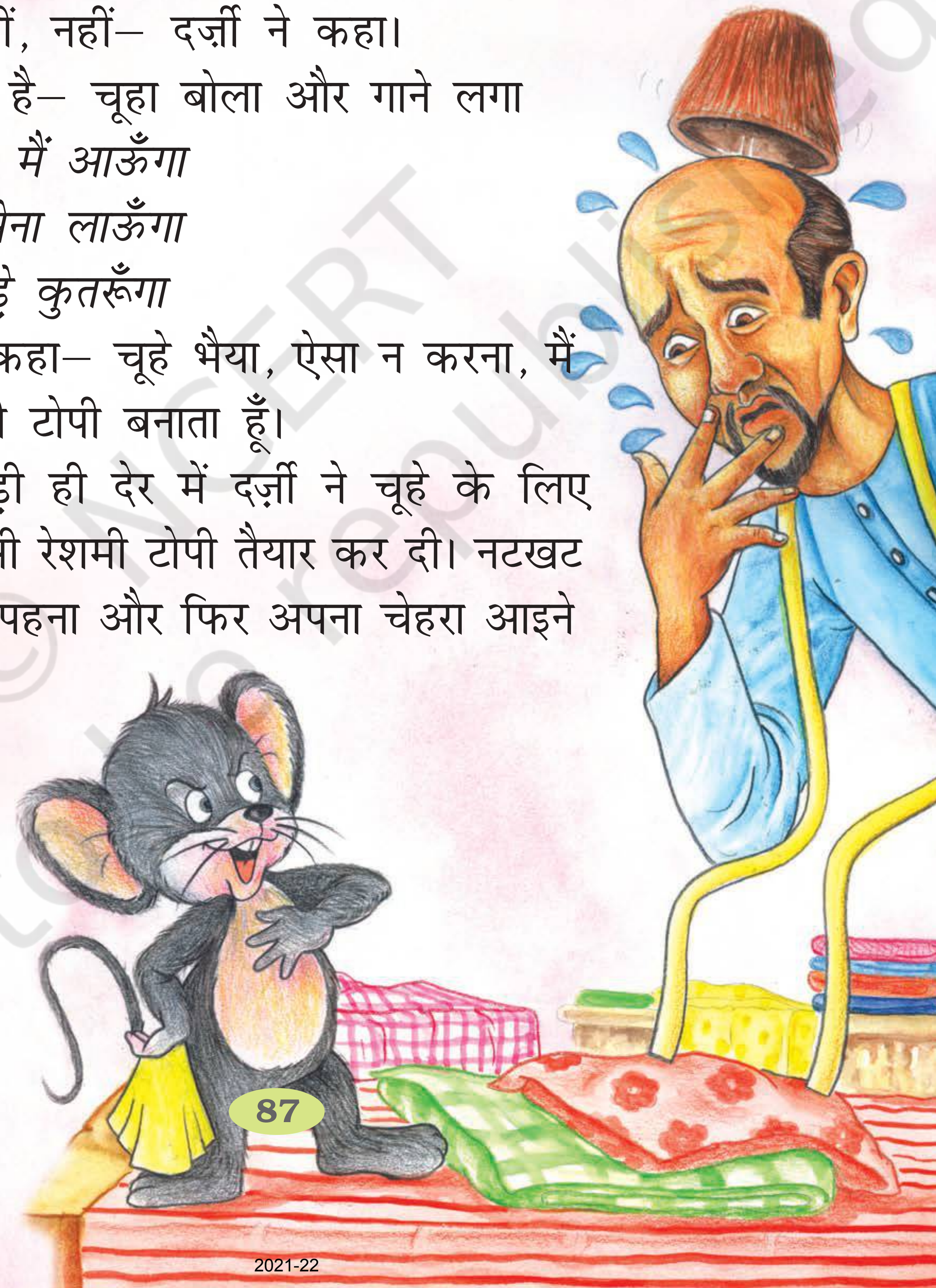

© NCERT not to be republished

यह टोपी तो एकदम सादी है। मैं इस पर चमकीले सितारे लगवाऊँगा– चूहे ने सोचा।

वह कूदता-फाँदता दुकान से बाहर निकल गया। वह सड़क पर शान से चल रहा था कि उसकी नज़र एक छोटी-सी दुकान पर पड़ी जहाँ सुनहरे और रूपहले सितारे बिक रहे थे। अंदर जा कर वह इधर-उधर उछलने-कूदने लगा।

दुकानदार ने कहा– अरे चल यहाँ से। तू यहाँ क्या करने आया है?

चूहे ने कहा– मैं अपनी टोपी के लिए सुनहरे और रूपहले सितारे खरीदने आया हूँ।

दुकानदार ने कहा– भाग यहाँ से। मुझे बेवकूफ़ बनाने की कोशिश न कर। एक चूहे को सितारों से क्या मतलब?

तुम मुझे सितारे बेचोगे या नहीं?– चूहे ने गुस्से से पूछा।

नहीं, नहीं, नहीं, मैं तुम्हें सितारे नहीं बेचूँगा– दुकानदार ने कहा।

फिर चूहे ने उत्तर दिया–

रातों रात मैं आऊँगा
अपनी सेना लाऊँगा
सारे सितारे बिखेरूँगा

not to be republished © NCERT
2021-22

दुकानदार ने कहा– चूहे भैया, ऐसा न करना। मैं तुम्हारी टोपी के लिए रंग–बिरंगे सितारे दे दूँगा और यही नहीं, उन्हें तुम्हारी टोपी में टाँक भी दूँगा।

अच्छा, तो ज़रा जल्दी करो– चूहे ने कहा।

टोपी बनकर तैयार हो गई। चूहा टोपी पहनकर आइने के सामने खड़ा हुआ तो खुशी से उसका मन नाच उठा। वह सोचने लगा– मैं भी किसी राजा से कम नहीं हूँ। मैं अपनी सुंदर टोपी किसे दिखाऊँ? चलो अपनी चमकीली टोपी राजा को ही दिखाता हूँ।

एक घंटे के अंदर ही नटखट चूहा राजमहल में राजा के पास आ पहुँचा।

वह राजा के सामने जा खड़ा हुआ। राजा अचानक चूहे को देख कर बहुत हैरान हुआ। उसने पूछा– अरे, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

चूहे ने कहा– महाराज, पहले यह बताइए कि मैं इस टोपी में कैसा लग रहा हूँ।

राजा ने जवाब दिया– वाह, तुम तो एकदम राजकुमार लग रहे हो।

चूहा झटपट बोला– अच्छा, तो फिर उतरो गद्दी से। यहाँ मैं बैठूँगा।

not to be republished © NCERT
2021-22

राजा को हँसी आ गई। उसने कहा– भाग यहाँ से। मेरा सिंहासन चूहों के लिए नहीं है। केवल एक राजा ही इस पर बैठ सकता है।

चूहे ने पूछा– तो क्या तुम मुझे अपनी गद्दी नहीं दोगे?

बिल्कुल नहीं। मैं तुम्हें अपना सिंहासन नहीं दूँगा– राजा ने उत्तर दिया।

तो तुम नहीं उतरोगे?– चूहे ने फिर से पूछा।

नहीं, नहीं– राजा अपनी बात पर अड़ा रहा।

राजा ने आदेश दिया– पकड़ लो इस चूहे को। सिपाही चूहे को पकड़ने दौड़े।

© NCERT not to be republished

चूहा सरपट उनके बीच से निकल गया और सिपाही एक के ऊपर एक गिर पड़े।

अब चूहे ने अपनी कमर पर हाथ रखकर कहा–

रातों रात मैं आऊँगा
अपनी सेना लाऊँगा
तेरे कान कुतरूँगा

राजा ने सोचा, चूहों की फ़ौज तो पूरे महल को तहस-नहस कर देगी। वह डर से काँपने लगा।

चूहे ने फिर कहा–

रातों रात मैं आऊँगा
अपनी सेना लाऊँगा
तेरे कान कुतरूँगा

राजा डर से काँपने लगा। काँपती आवाज़ में उसने कहा– चूहे भैया, तुम बेकार में नाराज़ हो रहे हो। मैं अपनी गद्दी से अभी उतरता हूँ और तुम शौक से जितनी देर चाहो इस पर बैठ सकते हो।

चूहा बहुत खुश हुआ। शान से, वह सिंहासन पर बैठ गया और काफ़ी देर तक वहाँ आराम करता रहा। रात जब

© NCERT not to be republished

2021-22

काफ़ी बीत गई, वह गद्दी से कूदकर नीचे आया और खुशी-खुशी अपने घर को चल दिया।

उसने शान से अपनी चमकीली टोपी अपने सभी साथियों को दिखाई। सभी दोस्त उसकी कहानी सुनना चाहते थे।

2021-22

कहानी से

- दर्ज़ी चूहे की किस बात से डर गया?
- चूहा टोपी क्यों पहनना चाहता था?
- चूहा टोपी पर सितारे क्यों लगवाना चाहता था?
- दर्ज़ी ने चूहे की टोपी सिलने से क्यों मना कर दिया?

पहले क्या हुआ

- चूहा राजा के दरबार में गया।
- दर्ज़ी ने चूहे की टोपी सिल दी।
- चूहा दुकानदार के पास सितारे लेने गया।
- चूहे को रेशमी कपड़े की कतरन मिली।
- चूहा सिंहासन पर बैठ गया।
- चूहा तैयार होकर शहर की तरफ़ निकल पड़ा।

तुम्हारी समझ से

- बारिश के मौसम में ऐसा क्या होता है जिससे चूहा अपने बिल में से निकल नहीं पाया होगा?
- क्या तुम्हें भी चूहा नटखट लगा? क्यों?
- कपड़े वाले ने, दर्ज़ी ने, सितारे वाले ने चूहे की बात पर ध्यान नहीं दिया। तुम्हें इसका क्या कारण लगता है?

अँगूठे की छाप से चूहा

पिछले साल तुमने अँगूठे की छाप से चिड़िया, अनार, गठरी, कठपुतली बनाई थी। अँगूठे की छाप से अपनी पसंद के कुछ और चित्र बनाओ।

© NCERT not to be republished

किसके पास जाओगे

चूहा अपने कामों के लिए बहुत से लोगों के पास गया। इन कामों के लिए तुम किसके पास जाओगे?

काम	नाम
कपड़ा खरीदने	....
लकड़ी की कुर्सी बनवाने	....
किताब पर जिल्द चढ़वाने	....
बाल कटवाने	....
मोहल्ले की रखवाली करवाने	....
मिट्टी के दीए और सुराही खरीदने	....
माँ की घड़ी ठीक करवाने	....

एक-अनेक

खाली जगह भरो।

- इस कमरे में दो .... हैं। (खिड़की)
- बुआ समीना के लिए ढेरों .... लाईं। (कॉपी)
- .... मैदान में फ़ुटबॉल खेल रही हैं। (लड़की)
- गोविंद तेज़ी से .... चढ़ रहा था। (सीढ़ी)
- गंदी जगह पर .... भिनभिनाती रहती हैं। (मक्खी)

© NCERT not to be republished

तुम्हारी बात

- तुम बजाज होते तो चूहे को कपड़ा देते या नहीं? क्यों?
- चूहा राजा बनकर देखना चाहता था। तुम्हारे विचार से राजा दिन भर क्या करते होंगे?
- तुम चूहा बनना पसंद करोगे या राजा? क्यों?

कैसे हो काम

दर्ज़ी अपने काम में कैंची, फ़ीते, मशीन, धागे आदि का इस्तेमाल करता है। ये लोग किन चीज़ों की मदद से अपना काम करते हैं–

बढ़ई	....	....
रसोइया	....	....
डॉक्टर	....	....
कुम्हार	....	....
चित्रकार	....	....
किसान	....	....

दर्ज़ी का र

दर्ज़ी शब्द में **र** की आवाज़ है जिसे ऊपर (र्‍) निशान लगाकर लिखा जाता है। ऐसे ही कुछ और शब्द लिखो।

....

....

© NCERT not to be republished

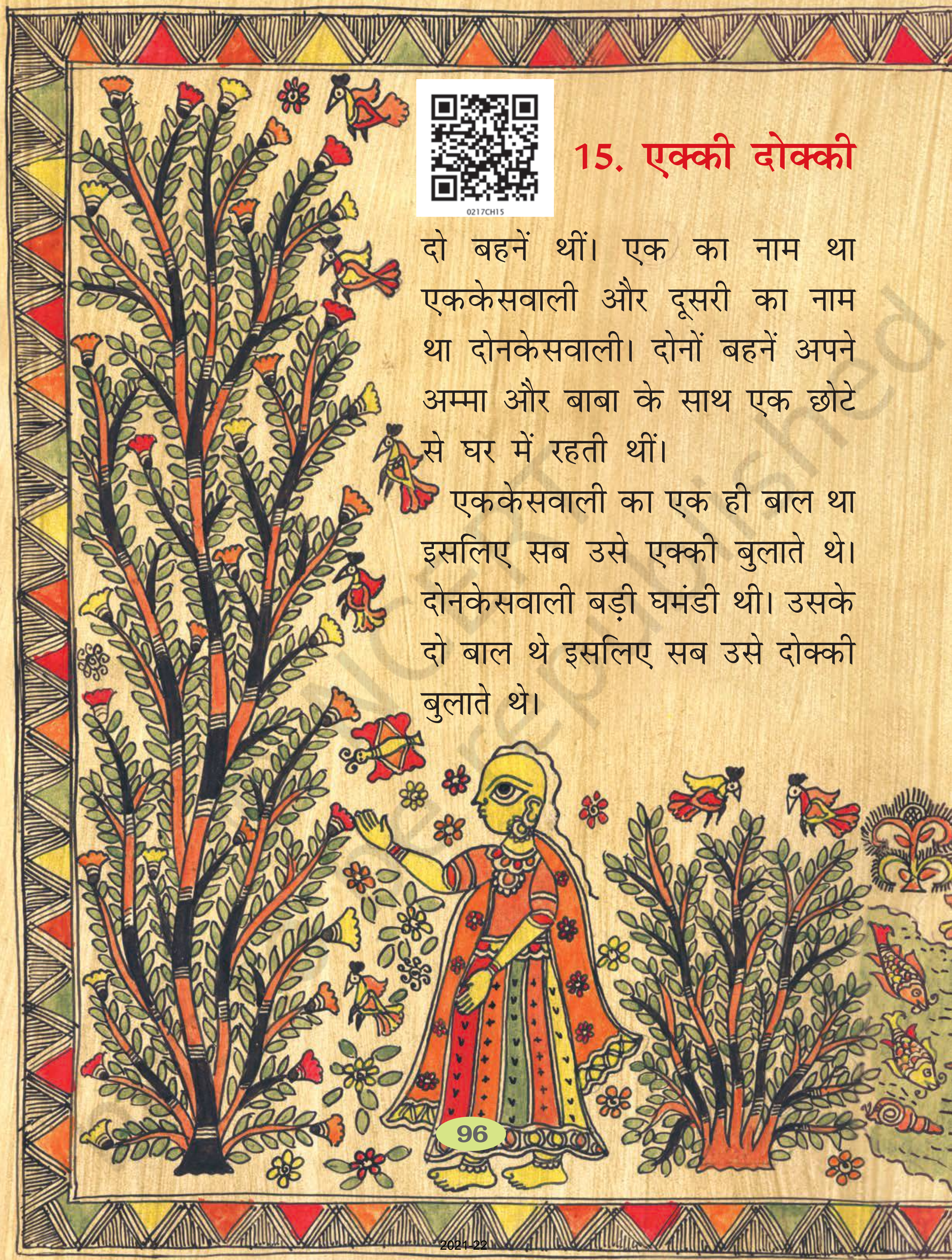

0217CH15

15. एक्की दोक्की

दो बहनें थीं। एक का नाम था एककेसवाली और दूसरी का नाम था दोनकेसवाली। दोनों बहनें अपने अम्मा और बाबा के साथ एक छोटे से घर में रहती थीं।

एककेसवाली का एक ही बाल था इसलिए सब उसे एक्की बुलाते थे। दोनकेसवाली बड़ी घमंडी थी। उसके दो बाल थे इसलिए सब उसे दोक्की बुलाते थे।

अम्मा सोचती थी कि दोक्की जैसी सुंदर लड़की तो दुनिया में है ही नहीं। और बाबा– उनको सोचने की फ़ुरसत ही कहाँ! काम में जो उलझे रहते थे।

दोक्की हमेशा अपनी बहन पर रौब जमाती रहती। एक दिन एक्की घने जंगल में गई। चलते–चलते वह घने जंगल के बीच आ पहुँची। चारों तरफ़ सन्नाटा था। अचानक उसने एक आवाज़ सुनी– पानी! मुझे प्यास लगी है! कोई पानी पिला दो!

एक्की रुकी और उसने चारों तरफ़ घूमकर देखा। वहाँ तो कोई नहीं था। फिर उसने देखा, सूखी, मुरझाई हुई मेहँदी की एक झाड़ी, जिसके पत्ते सरसरा रहे थे।

2021-22

पास में ही पानी की धारा बह रही थी। एक्की ने चुल्लू में पानी भरकर एक बार, दो बार, कई बार झाड़ी के ऊपर डाला।

मेहँदी की झाड़ी बोली– धन्यवाद एक्की! मैं तुम्हारी ये मदद याद रखूँगी।

एक्की आगे बढ़ गई।

फिर अचानक सन्नाटे में उसे एक और आवाज़ सुनाई दी– मुझे भूख लगी है! कोई मुझे खाना खिला दो!

एक्की ने देखा कि एक मरियल सी गाय पेड़ से बँधी हुई थी।

एक्की ने घास-फूस इकट्ठी की और गाय को खिला दी। उसके बाद उसने गाय के गले में बँधी रस्सी को खोल दिया।

धन्यवाद एक्की! मैं तुम्हारी ये मदद हमेशा याद रखूँगी– गाय ने कहा।

एक्की अब चलते-चलते थक गई थी। उसे गर्मी भी लग रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे? कहाँ जाए?

तभी उसे दूर एक झोंपड़ी दिखाई दी। एक्की दौड़कर झोंपड़ी तक गई और आवाज़ लगाई– कोई है ?

एक बूढ़ी अम्मा ने दरवाज़ा खोला।

बूढ़ी अम्मा ने कहा– आहा! आ गई मेरी बच्ची? मैं तुम्हारी ही राह देख रही थी। आओ, अंदर आ जाओ।

एक्की हैरान हो गई और चुपचाप झोंपड़ी में आ गई।

झोंपड़ी में आकर उसे बहुत अच्छा लगा।

बूढ़ी अम्मा ने कहा– आओ बेटी, तुम्हारे लिए नहाने का पानी तैयार है। पहले अच्छी तरह से तेल लगाओ और उसके बाद नहा लो। फिर हम खाना खाएँगे।

एक्की ने शरमाते हुए कहा– नहीं! नहीं!

अम्मा ने पुचकार कर कहा– अरे नहीं क्या! जैसा मैं कहती हूँ वैसा करो।

एक्की ने बूढ़ी अम्मा की बात मान ली।

फिर पता है क्या हुआ?

एक्की ने जैसे ही अपने सिर से तौलिया हटाया तो उसने पाया कि उसके सिर पर एक नहीं परंतु बहुत सारे बाल थे।

एक्की इतनी खुश हुई कि वह खाना खा ही नहीं सकी। बस, बार-बार वह बूढ़ी अम्मा का धन्यवाद ही करती रही!

बूढ़ी अम्मा ने मुस्कुराते हुए कहा– अब तुम घर जाओ बेटी और हमेशा खुश रहो।

एक्की के तो जैसे पंख ही निकल आए। वह सरपट घर की तरफ़ दौड़ चली। रास्ते में उसे गाय ने मीठा-मीठा दूध दिया और झाड़ी ने हाथों पर रचाने के लिए मेहँदी दी।

घर पहुँचकर एक्की ने सारी कहानी सुनाई।

दोक्की कहानी सुनते ही सीधे जंगल की तरफ़ भागी।

दोक्की इतना तेज़ भाग रही थी कि न उसने प्यासी झाड़ी और न ही भूखी गाय की पुकार सुनी।

वह तो धड़धड़ाती हुई झोंपड़ी में घुस गई और बूढ़ी अम्मा को हुक्म दिया– मेरे लिए नहाने का पानी तैयार करो।

हाँ, आओ, मैं तुम्हारी ही राह देख रही थी। पानी तैयार है, नहा लो– बूढ़ी अम्मा ने दोक्की से कहा।

झटपट नहाने के बाद जैसे ही दोक्की ने तौलिया सिर से हटाया, उसकी तो चीख निकल गई!

दोक्की के दो ही तो बाल थे और वे भी झड़ गए थे।

रोते-रोते दोक्की घर की तरफ़ चलने लगी। रास्ते में उसे गाय ने सींग मारा और मेहँदी की झाड़ी ने काँटे चुभो दिए।

मगर अब दोक्की अपना सबक सीख चुकी थी। इसके बाद एक्की, दोक्की अपने अम्मा-बाबा के साथ खुशी-खुशी रहने लगीं।

2021-22

कहानी से

- क्या बूढ़ी अम्मा पहले से जानती थीं कि एक्की और दोक्की उनके घर आने वाली हैं? तुम्हें कैसे पता चला?
- दोक्की का मेहँदी की झाड़ी और गाय पर ध्यान क्यों नहीं गया?
- एक्की ने झाड़ी और गाय की मदद कैसे की?

मेहँदी

- मेहँदी की झाड़ी ने एक्की को लगाने को मेहँदी दी। मेहँदी की झाड़ी से लगाने के लिए मेहँदी कैसे तैयार की जाती है? पता करो और सही क्रम में लिखो।

  पहले मेहँदी की झाड़ी से ....

  ....

  ....

  ....

  ....

- मेहँदी जब रचाई जाती है तब उसका रंग गाढ़ा होता है और धीरे-धीरे फीका पड़ता जाता है। किन-किन चीज़ों का रंग कुछ समय बाद फीका हो जाता है?

  मेहँदी ....

  सूती कपड़े ....

© NCERT not to be republished

- नीचे दी गई जगह में अपनी हथेली को रखो। अब इसके चारों ओर पेंसिल फिराओ। लो बन गया तुम्हारा हाथ। मेहँदी से जो डिज़ाइन तुम अपनी हथेली पर बनाना चाहते हो वह बनाओ।

अपने मन से

कहानी में दोनों बहनों का नाम उनके बालों की संख्या पर पड़ा। सोच कर खाली जगह में नाम लिखो।

बालों की संख्या	पूरा नाम	छोटा नाम
1	एककेसवाली	एक्की
2	दोकेसवाली	दोक्की
100	....	....
0	....	....

© NCERT not to be republished

तुम्हारे वाक्य

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। हर वाक्य में एक मोटा शब्द छपा है। है, उनकी मदद से तुम अपने मन से सोचकर वाक्य बनाओ और कक्षा में बताओ।

- जंगल में चारों तरफ़ **सन्नाटा** था।
- बाबा को सोचने की **फ़ुर्सत** ही कहाँ, काम में जो उलझे रहते थे।
- वह **सरपट** घर की तरफ़ दौड़ चली।
- मेहँदी की झाड़ी **मुरझा** गई थी।

नाम–काम

एक्की ने देखा कि एक मरियल–सी गाय पेड़ से बँधी हुई थी।

एक्की, **गाय** और **पेड़** नाम वाले शब्द हैं ।

देखा और **बँधी** काम वाले शब्द हैं।

कहानी में से ऐसे पाँच–पाँच शब्द और छाँटकर लिखो।

नाम वाले शब्द	**काम वाले शब्द**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

© NCERT not to be republished

रचनाकार-जिनकी कविता और कहानियाँ हमने पढ़ीं

1.	ऊँट चला	प्रयाग शुक्ल
2.	भालू ने खेली फ़ुटबॉल	हरदर्शन सहगल
3.	म्याऊँ, म्याऊँ!!	धर्मपाल शास्त्री
	बिल्ली कैसे रहने आई आदमी के संग	विजय एस.सिंह
4.	अधिक बलवान कौन?	योगेश जोशी
5.	दोस्त की मदद	ए.के. रामानुजन
6.	बहुत हुआ	हरीश निगम
	काले मेघा पानी दे	कौशल पाण्डेय
	सावन का गीत	नवीन सागर
7.	मेरी वाली किताब	होल्गर पुक
8.	तितली और कली	शोभा देवी मिश्र
9.	बुलबुल	
10.	मीठी सारंगी	गणेश दत्त शर्मा
11.	टेसू राजा बीच बाज़ार	निरंकार देव सेवक
12.	बस के नीचे बाघ	
	तेंदुए की खबर	
	बाघ का बच्चा	प्रयाग शुक्ल
13.	सूरज जल्दी आना जी	रमेश तैलंग
14.	नटखट चूहा	
15.	एक्की-दोक्की	संध्या राव
16.	छुट्टी हुई खेल की	रामकृष्ण शर्मा खद्दर

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)

(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)

द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंत:करण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णत: पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

© NCERT not to be republished